शब्दों के साये

“मेरे दिल के आसपास रहते हरदम शब्दों के साये,
कुछ मीठे, कुछ तीखे, कभी मिश्री और शहद से घुले
कभी अपने से लगे, और कभी कभी लगे जैसे पराए
शब्द ही मेरी दुनिया, शब्द ही मेरी राहें, मेरे हमसाए”

विमला गुगलानी ‘गुग’

इसी क़लम से :-

- स्मृतियों के आर-पार (विभाजन के दुःख और समाजिक कुरीतियों पर आधारित पारिवारिक पुस्तक)
- इंद्रधनुषी जीवन कला (निबंध-संग्रह)
- उत्सव है ज़िंदगी (निबंध-संग्रह)
- मन कस्तूरी (निबंध-संग्रह)
- सन्नी - बन्नी (बाल काव्य संग्रह)
- रंगला जंगल (पंजाबी में पशु-पक्षियों पर आधारित कविताएँ)
- चंडीगढ़ साहित्य अकादमी की ओर से 2019 में इस बाल काव्य संग्रह के लिए अनुदान राशि प्रदान की गई।
- अमर स्मृतियाँ-पाकिस्तान से विस्थापित मेरे परिवार की सात पीढ़ियों के संघर्ष और श्रद्धांजलि की सच्ची दास्ताँ।
- मन-दर्पण (कहानी संग्रह)
- हिंदी और पंजाबी में लगभग साँझे काव्य, कहानी संग्रह प्रकाशित। विभिन्न अखबारों, मैगज़ीनों में लेख, कविताएँ, कहानियाँ, सुझाव, रेसिपीज़, छप चुकी हैं। रेडियो, दूरदर्शन पर प्रोग्राम देने का सौभाग्य और कई संस्थानों से सम्मानित।

शब्दों के साये

(काव्य संग्रह)

विमला गुगलानी 'गुग'

सप्तऋषि पब्लिकेशन
चंडीगढ़

Shabdon Ke Saaye

(Poetry)

by

Vimla Guglani 'Gug'
Kothi No. 3200, Sector 40-D,
Chanidgarh
Mobile : 9888973200
E-mail : vimlaguglani@gmail.com

ISBN : 978-81-968482-5-5

Edition 2023

© Author

Published by
Saptrishi Publication
Plot No.25/6, Industrial Area, Phase-2,
Near Tribune Chowk, Chandigarh.
E-mail: sapatrishi94@gmail.com
94638-36591,77174-65715

All rights reserved. No part of this book maybe reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the Author.

Visitusat:www.saptrishipublication.com

Printed at S.R. Printers

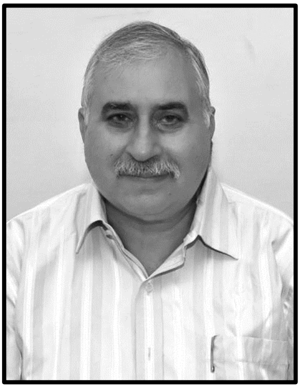

समर्पण

यह मेरा काव्य संग्रह परमपिता के बाद मेरे स्वर्गीय पूजनीय माता-पिता श्रीमती शांति देवी सेतिया और श्रीमान लाजपतराए सेतिया और मेरे हमसफ़र स्वर्गीय श्रीमान विनोद कुमार गुगलानी जी को समर्पित है, जिनके साथ ने मेरे जीवन की राहों को आसान बनाया।

आभार

सर्वप्रथम मैं उन सभी पाठकों का दिल की गहराइयों से धन्यवाद करना चाहूंगी जिनकी हौसला-अफ़ज़ाई से मैं अपनी नौंवी पुस्तक और पहला काव्य संग्रह साहित्य को समर्पित करने जा रही हूं। इससे पहले मेरे बाल काव्य संग्रह या फिर हिंदी और पंजाबी में कई सांझे काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। मेरी लेखनी में मेरा साथ देने के लिए मेरे परिवार यानि कि बेटे समीर गुगलानी, पंकज गुगलानी और पुत्रवधुएं नंदनी और श्वेता गुगलानी और मेरी नन्ही परी, मेरी प्यारी पोती सना गुगलानी का उनके सहयोग के लिए आभार। परिवार साथ हो तभी हिम्मत बढ़ती है। जब भी मेरी नई किताब आती है तो परिवार में जशन का माहौल बन जाता है, और मेरी लेखनी को और भी बल मिलता है।

इस काव्य संग्रह की सभी कविताएं मेरे दिल की आवाज़ हैं और मेरे दिल के बहुत करीब हैं, जैसे कि प्रकृति के पास समुद्र, पहाड़ों, पेड़-पौधों, त्यौहारों से जो मिला, उसी का वर्णन करने की एक छोटी सी कोशिश है। कई वर्षों की साधना के बाद मैं इसे पूर्ण रूप दे सकी हूं। जो भी अच्छी-बुरी घटनाएं समाज में, देश-दुनिया में, रिश्तों में हमारे आसपास घटती हैं, सभी का ध्यान उस ओर जाता है और हर कोई उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, मगर कवि का मन उसे शब्दों की लड़ी में पिरोने को आतुर हो उठता है और कम से कम शब्दों में पेश करने की कोशिश करता है।

मेरी इस साहित्यक यात्रा में परिवार का सहयोग तो हमेशा से ही रहा है, अमर कवियों को पढ़ने का सौभाग्य भी मिला, परन्तु इसके साथ साथ समकालीन कवियों, लेखकों और पत्रकारों का भी दिल से आभार। वरिष्ठ कवि, साहित्यकार, व्यंगकार, 'जागृति' पत्रिका के पूर्व संपादक श्री प्रेम विज जी का मार्गदर्शन अपने आप में एक मिसाल है जो कि हर कदम पर मेरा हौसला बढ़ाते हैं। पंजाबी की मैगज़ीन 'सोच दी शक्ति' के मुख्य संपादक और ओनर सरदार दलजीत सिंह जी अरोड़ा से मिलना भी मेरा परम सौभाग्य रहा। इस मासिक मैगज़ीन में पिछले ग्यारह साल से लगातार लिखने का सुअवसर मिलने से ही मेरी लेखनी की हिम्मत बढ़ी और दिन-ब-दिन सुधार होता गया। धन्यवाद करना चाहूंगी महान कवि, लेखक, साहित्यकार, वरिष्ठ पत्रकार एवं शिक्षाविद् डा. विनोद कुमार शर्मा जी का, जो प्रेरणापुंज तो है हीं साथ ही वे

अपनी अख़बारों में मेरी रचनाओं को हमेशा स्थान देते हैं। इसके अतिरिक्त कई हिंदी, पंजाबी की मैगज़ीनों, अख़बारों में मेरी कविताएं, कहानियां, आर्टिकल, रेसिपीज़ अक्सर छपते रहते हैं, उन सभी का भी धन्यवाद।

मैं भारतीय विकास परिषद का धन्यवाद करती हूं जिन्होंने वर्ष 2023 में महिला दिवस पर चंडीगढ़ में अपनी विशेष सेवाओं के लिए पांच महिलाओं को सम्मानित किया जिसमें कवियत्री एवं लेखिका का सम्मान मुझे मिला। इसी प्रकार इसी वर्ष सुप्रीम सीनियर सीटिज़न एसोसिएशन सैक्टर-चालीस, चंडीगढ़ से भी मुझे विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। इसी लेखनी की बदौलत ही 2022 में मुझे कोच लीडरशिप सैंटर चंडीगढ़ और देहली चौप्टर का नैशनल प्रैज़ीडैंट होने का सुअवसर मिला। मैं मेरे वार्ड नं 27 की एरिया कौंसलर और भूतपूर्व डिप्टी मेयर श्रीमति गुरबख्श रावत जी के सहयोग की सराहना करती हूं जो हमारी साहित्यक गतिविधियों में सहयोग देने के साथ साथ अपनी उपस्थिति भी दर्ज करवाती हैं।

योग शिक्षिका, समाज सेविका और चंडीगढ़ नारी एकता संगठन की फाउंडर श्रीमती राजेश गणेश और को-फाउंडर डॉ. अनीता अग्रवाल (मैं भी इसी संस्था की को-फाउंडर हूं), वीना शर्मा, कंचन भल्ला, आकाश-किरन सेतिया, सुभाष -रेनू नागपाल, सुनील-बबीता बतरा, राजन सेतिया और मेरी प्रिय सखी श्रीमति निर्मल ओबराए का भी मेरी लेखनी की सराहना करने के लिए धन्यवाद। इसके अतिरिक्त उच्चकोटि के विद्वान श्री कमलेश भट्ट, विनय लूथरा, नंवेदु, राजेश बंसल, डॉ. वंदना अग्रवाल, मोनिका गर्ग, ज्योति नागपाल का भी शुक्रिया जो हमेशा मेरा हौसला बढ़ाते हैं।

अंत में सबसे अधिक और दिल से धन्यवाद मेरे स्वर्गीय पति श्रीमान विनोद कुमार गुगलानी जी का जिनकी प्रेरणा और सहयोग ने हर कदम पर मेरा साथ दिया और मेरा हौसला बढ़ाया। मैं दिल से धन्यवादी हूं स्थापित प्रकाशक श्री बलदेव सिंह जी की जिनके सप्तऋषि पब्लिकेशन ने मेरे इस काव्य संग्रह को सुंदर आकार दिया।

एक बार फिर से सभी का धन्यवाद।

– विमला गुगलानी 'गुग'
कोठी नं० 3200, सैक्टर 40डी,
चंडीगढ़।
मो-9888973200

अनुक्रमणिका

1.	किताबें	11
2.	पक्षी अकेला	12
3.	तन्हाईयाँ	14
4.	सुहानी शिकायत	15
5.	कौन हूँ मैं?	16
6.	शब्दों के साये	18
7.	उदासी की वजह	19
8.	हुनर	20
9.	मौसम बदला	21
10.	किरचें	22
11.	ना खेलूं होली	23
12.	प्रणाम शहीदों को	24
13.	करोना में प्यार कहां?	25
14.	कान की व्यथा	26
15.	बिग-बॉस	28
16.	मेरा भारत महान	29
17.	रिश्तों की डोरी	30
18.	बस तूं ही नही	32
19.	जय श्री राम	33
20.	दीप जलाएँ	34
21.	इक खबर	35
22.	नया साल	37
23.	कुदरत की नाराज़गी	38
24.	26 जनवरी- गणतंत्र दिवस	39
25.	भूदान	40

26. बसंत ऋतु 41
27. हरियाली हो चहुँ ओर 42
28. जितना साथ मिले 43
29. पुलवामा के शहीद 45
30. हिंदी दिवस 46
31. दिल में 47
32. दिल में मुझको 48
33. बूढ़ी काया 49
34. आज़ादी का अमृत महोत्सव 51
35. प्रण 52
36. आसां नहीं राधा होना 53
37. अमन-चैन 54
38. मेरे हिस्से का आसमान 55
39. प्रवास 56
40. भया उजारा 57
41. पति-पत्नी 58
42. साथ नहीं चाहिए 60
43. भरा-मन 61
44. तेरे बिन 62
45. फरियाद 63
46. मां दिवस 64
47. न जाने क्यों 65
48. मां 66
49. योग 67
50. थोड़ी छांव 68
51. मालगाड़ी 69
52. मेरा वजूद 70
53. मिशन चंद्रयान-3 71
54. जागो नारियो जागो 72
55. अकेली 73
56. बंटवारा 75

57. विस्फोटक जनसंख्या 76
58. बांसुरी वाला 77
59. गोपियों की पुकार 78
60. पौधों जैसे रिश्ते 79
61. मेरा भारत 80
62. ख़्वाहिश 81
63. ज़ख़्म 82
64. मेरी कार्यस्थली 83
65. मैं भी बुद्ध हो जाऊं 84
66. बारात आई मेरे द्वार 86
67. बापू, फिर से आओ 87
68. काश लौट आएं वो दिन! 88
69. दूरदर्शी 90
70. चले गए जो 91
71. औरत से है कायनात 92
72. समुद्र 93
73. ऊपर का माला खाली 94
74. पूत के पांव दिख जाते पालने में 96
75. फिर से आओ 97
76. शब्दों का चक्कर 99
77. क्या है कविता 100
78. भोर 102
79. तीन रिश्ते 103
80. पहाड़ 104

किताबें

युग भले ही डिजिटल आ गया,
किताबों से न मुँह मोड़ पाओगे।
गर आज न क़दर की इनकी,
याद रखना बहुत पछताओगे।

ये तो है घर परिवार सी,
भला कैसे इन्हें भुलाओगे।
देखोगे जब आते जाते,
छूने का मोह न छोड़ पाओगे।

फुरसत में, या यूँ ही तन्हाई में,
बेख़बर हो हाथों से सहलाओगे।
खड़े खड़े दो चार लाईनें पढ़ते ही,
कितने ही पन्ने पलट जाओगे।

किताबों में बसी मदहोश सी खुशबू,
है क़ीमती यादों के झरोखों से भीनी।
कोशिश कर लो न होगी कभी डिलीट
हर बार कुछ न कुछ तो नया पाओगे।

कभी फिसल गई जो महबूब के हाथों से,
बहाने से झुकने के मोह से न बच पाओगे।
रखे थे जो फूल किताबों में कभी छुपाकर,
उम्र गुज़र जाए मगर, खुशबू से न उभर पाओगे।

हज़ारों तरीके हैं इल्म लेने के, ले आओगे,
यहाँ न बिजली की चिंता, न बैटरी का डर।
न तकनीकी ख़राबी, न चोरी की ही फिकर
ऐसा आजीवन साथी भला कहाँ ढूँढ पाओगे।

◈◈◈◈

पक्षी अकेला

गोधूलि और साँझ की बेला,
अलबेला वो पक्षी अकेला।

भूला घर का रास्ता, जाए किधर,
परेशान सा, देख रहा बस इधर उधर।

रास्ता भटका, बिछुड़ा झुंड,
डरा सहमा, सिकुड़े पंख।

हे पक्षी, तुम्हें कहाँ है जाना,
बताओ ज़रा अपना ठिकाना।

क्या तुम नर हो, या हो मादा,
रात अंधेरी, चाँद भी आधा।

नर हो तो कोई बात नहीं,
मादा हो तो बच के रहना।

जल्दी से तुम छुप जाओ,
अपनी बस तुम लाज बचाओ।

पक्षी उड़ कर नीचे आया,
मुझसे आकर यूं बतलाया।

हम पक्षी हैं अनपढ़, गँवार,
हमें न दुनिया की दरकार।

मगर उसूल हमारे पक्के,
रक्षक बनते इक दूजे के।

शुक्र है हम इन्सान नहीं,
पक्षी हैं, शैतान नहीं।

मैं तो यूँ ही घबराया,
वो देखो मेरा साथी आया।

डर तो है इन्सानों से,
धरती के शैतानों से।

चेहरे पे चेहरा है इनके,
मुँह पर सच्चे मन के झूठे।

इनसे तो हम पक्षी अच्छे,
नर मादा का फ़रक नहीं।

किसी को किसी से डर नहीं,
उड़ बादलों में समा गया,
आईना हमें दिखा गया।

◈◈◈◈

तन्हाईयाँ

रहते हैं दुनिया की भीड़ में, फिर भी तन्हा हैं हम,
दिल में उतर के देखा, समझे, कितने बेजुबां हैं हम।

सीखा नहीं सबक किसी की दास्ताँ से,
खड़े रहे चिपक के बस अपने ही निशाँ पे।

हँसते मुस्कुराते वो तो आगे निकल गए,
इंतज़ार में खड़े हैं, हम आज भी उसी मकाँ पे।

वादे पे उसके हमने एतबार कर लिया,
पुकारे तो, लौट आएंगे हम आसमां से।

जो किया वो भाया नहीं, जो चाहा वो मिला नहीं,
गुज़रते रहे हर घड़ी किसी न किसी इम्तिहां से।

दिल गुम हो गया, खुद का पता भी खो गया,
ईमान बेचकर भी खुद को साबित न कर सके।

आना, मगर पायल पहन कर न मेरे ख़्वाबों में,
छमछम से बेदख़ल न हो जाएं तन्हाईयों से हम।

◈◈◈◈

सुहानी शिकायत

जब मिले पहली बार तो बोले,
काश हम कभी पहले मिले होते।
अब मिलते हैं तो रहते हैं गुमसुम,
तुम्हीं कहो ये अंदाज़-ए-गुफ़्तुगू क्या है।

शिकायत रहती उनकी जुबां पे हरदम,
क्यूं शिद्दत से एहसास-ए-मोहब्बत नहीं होती।
कुछ तो कमी रह गई इबादत में मेरी,
बिना वजह तो चाहत कम नहीं होती।

गम दिया उसने, शिकायत नहीं मुझे,
दवा न सही, फ़क़त दुआ ही दी होती।
चलो दिल में दर्द भी तेरी इनायत है,
वरना तो आज तेरी जुस्तजू नहीं होती।

चले भी आओ कि साँस रूकने लगी,
चाँद जाने लगा सूरज को न्यौता देकर।
अपनों की शिकायत पर भला कैसा गिला,
ऐसी शिकायत तो शिकायत नहीं होती।।

◈◈◈◈

कौन हूँ मैं?

तन्हाई में अक्सर सोचती हूँ,
कौन हूँ मैं, क्या है मेरी पहचान।
बेटी, बहन मैं कब बनी,
इसका नहीं मुझे गुमान।

क्या मैं सिर्फ फलाँ की बेटी,बहन,
बबलू की अम्मा, रामू की पत्नी,
या फिर मिसिज़ एक्स, वाई, जैड
बस-फ़क़त, यही हैं मेरे नाम।

रिश्ते अनेक, पर एक ख़ास रिश्ता,
जो सब रिश्तों पर छाया।
ता उम्र निभाना इसको,
मुझको यही सिखाया।

पुरुषों के समाज में जैसे औरत,
कुचला, सहमा, दोयम दर्जे का प्राणी,
हर घर में माँ, बेटी, बहन और पत्नी,
फिर भी दोहराते हैं वही कहानी।

मगर बदल गया अब जमाना,
अब नहीं होगा कोई समझौता,
चालाकी, बेवफ़ाई नहीं चलेगी,
सती होकर नहीं खाएगी धोखा।

मुझे नहीं बनना माँ सीता,
न देनी अग्नि परीक्षा।
विश्वास का जब दामन छूटा,
फिर कैसा प्यार और कैसी दीक्षा।

बन राधा, रुक्मणी की आँख में,
मुझे बिल्कुल नहीं खटकना।
जोगन मीरा बन इकतारा लेकर,
मुझको वन वन नहीं भटकना।

बुद्ध की रानी यशोदरा बन, अकेली
बेटे राहूल को मैं नहीं पालूँगी।
सात वचन लेकर जो त्याग दे,
नहीं उसके पीछे भागूँगी ।

क्या क़सूर था उर्मिला का,
जो सही पति की दूरी
जिसे आभास न पत्नी पीड़ा का
उसे सहना क़तई नहीं मजबूरी।

बन गांधारी जान बूझ,
मैं तो पट्टी नहीं बाँधूँगी ।
क़दम क़दम पर साथ चलूँगी,
कर्त्तव्यों से नहीं भागूँगी ।

ज़िंदगी में एक को ही,
बस वरमाला पहनाऊँगी।
जुल्म यातना नहीं सहूँगी,
कदम से कदम मिलाऊँगी ।

नहीं मैं अब पैरों की जूती,
वजूद है मेरा भी अपना।
आ मिलकर चलें हम दोनों,
रास्ता तो एक ही है अपना।

कोई न मुझको समझे चंदन,
जो साँप बन लिपट जाओगे।
ज्वाला, चंडी हूँ मैं तो, मत छूना,
वरना जल जाओगे, झुलस जाओगे ।

◈◈◈◈

शब्दों के साये

मेरे दिल के आसपास हरदम
रहते हैं, शब्दों के साये।

कुछ मीठे, कुछ तीखे,
कुछ मिश्री से घुले।

कुछ सच्चे, कुछ झूठे,
कुछ दूध से धुले।

कुछ असली, कुछ नकली,
कुछ हंस के भी मिले।

कभी रूक गई सांसे,
कभी ज़ख़्म भी सिले।

बात करते करते,
कभी परदे से हिले।

कभी अपने से लगे वो,
बन पराए भी मिले।

◈◈◈◈

उदासी की वजह

हो सके तो कभी किसी औरत से
उसकी उदासी की वजह पूछना,
दर्द को तो भीतर ही भीतर छुपाएगी
मगर आँखों से मुस्कुराएगी।

मर्द की तो फितरत है सदियों से
दर्द देने की रस्म भी प्यार से अदा करता है,
हम भी उसूलों के पक्के हैं
जो दर्द सहकर भी वफ़ा करते हैं।

मालूम है कि ये मुमकिन तो नहीं
फिर भी इक आस सी रहती है,
कभी ऐसा युग भी आएगा,यक सा हक़ होगा
चाँद, चाँदनी से सच्ची प्रीत निभाएगा।

बस अब इतने भी ख़्वाब न दिखाओ
वरना हम बार बार बिखरते ही जाएंगे,
बड़ी मुश्किल से सिया है जख़्मों को
सिसकते घावों को लेकर हम किधर जाएंगे ।

सदियाँ बीत गई, आज भी जमीं पथरीली है
प्यार बोया है हमने, काँटे तो नहीं,
सींचा है हमने ख़ूं और आँसुओं से
कभी न कभी शाखों पे दिल आएंगे ।

नहीं सुनूँगी अब मैं, मत देना कोई आदेश
होगी बन्दिशें बराबर, न मानूँगी उपदेश,
बुलंद हैं मेरे हौसले, सबको करदो खबर
आ ज़िंदगी के राह पे हम मिल कर करें सफ़र ।

यूँ तो हमें भी आता है, दगा देने का हुनर
पर क्या करें, हमें दिल ही दगा दे जाता है,
मजबूर नहीं करेंगे, तुझे वादे निभाने के लिए
ख़्वाबों में आ जाना, यादें वापिस ले जाने के लिए।

हुनर

कमाल का अंदाज़-ए-ब्यां,
उनके तो फ़क़त लब हिले
हम इज़हार-ए-मोहब्बत समझ बैठे।
गेसू कुछ इस क़दर गिरे,
उनके सुर्ख़ गालों पर
मेरे घर तक अंधेरा छा गया।

लिखावट-ए-हुनर देखिए,
वहाँ कागज़ पर लिखा बारिश
और हम यहाँ भीग गए।
हज़ारों अश्क़ थे क़ैद कोरों पर
उनकी पलकें जो उठी
सबको हिरासत मिल गई।

गैर ने छेड़ा, नगमा-ए-मोहब्बत
रोका हमने, मगर जज़्बात
इस क़दर पिघले, मोमबत्ती
जलती रही, हम धीरे धीरे
रिसते रिसते, हौले हौले
ज़मींदोज होते गए।

◈◈◈◈

मौसम बदला

सुगंधित वातावरण हुआ
छाई चहुँ ओर हरियाली,
चंदन चंदन महका हर वन
ऋतु देखो आई मतवाली।

कस्तूरी सा महके हर पल
मन मयूर पंछी सा गाए,
भीनी भीनी खुशबू फैली
भौंरे फिरते हैं बौराए।

फसल पकी, मन हो गया हर्षित
नैनो में समाए सपन सुहाने,
चमक रही गेहूँ की बलियाँ
मोती मोती दाने दाने।

कुदरत का हर रंग है अद्भुत
गरमी, सर्दी, प्रिय बसन्त,
ये तो है सब उसकी माया
उसकी लीला है बेअन्त।

◈◈◈◈

किरचें

न जाने क्यों वजूद पे मेरे बिखरी पड़ी ये किरचें,
टूटा तो कुछ भी नहीं, न जानें कहाँ से आई किरचें।

रखा पकड़ के कस कर, हर नाजुक शै को हमने,
छन्न की आहट न थी, फिर बिखरी कैसे किरचें।

हर रिश्ते को बिठाया, चिलमन के कोरों पर,
आहट से भी टूटने की डरते रहे हम उम्र भर।

चुपके से क्या टूटा, कैसे, कहाँ पड़ी दरार,
दिखा, सुना न कुछ भी, चमकी कैसे ये किरचें।

जाति, धर्म, धन, रुतबे से दूरी बना के रखी,
समझ न आई उड़ कर आई कहाँ से किरचें।

बेमुरव्वत हैं दुनिया वाले, रहना ज़रा सँभल के,
ख़ुद तोड़कर फेंक देते वो ही घरों में किरचें।

◈◈◈◈

ना खेलूं होली

फाल्गुनी ब्यार है,
रस की फुहार है,
फूलों का सिंगार है,
खुशबू और बहार है,
रंगों की बौछार है,
तितलियों की पुकार है,

पर मन तार तार है।
पंछी भी गाते हैं,
भंवरे गुनगुनाते हैं,
भीनी सी सुगंध है,
हवा मंद मंद है,
रंगीन सी फिज़ा है,
शाम धुआं धुआं है,
पर दिल बुझा बुझा सा है।

दामिनी का क्रंदन है,
गुड़िया की गुहार है,
मंहगाई की मार है,
रिश्वत बेशुमार है,
किसानों का धरना है,
करोना से डरना है,
मैं कैसे खेलूं होली।

कृष्ण कन्हैया आएंगे,
राधा को संग लाएंगे,
हम वृंदावन सजाएंगे,
मथुरा के पेड़े खाएंगे,
सब को न्याय दिलाएंगे,
खुशी खूब मनाएंगे,
तब फगुवा होली गाएंगे,
हम सबको रंग लगाएंगे।

प्रणाम शहीदों को

गर भगत सिंह जैसे शहीद न होते,
तो आज़ादी के ये दिन नसीब न होते।

उनकी कुरबानी रंग लाई,
बरसों बाद आज़ादी आई।

फिरंगियों ने कोहराम मचाया,
भारतीयों पर हर जुल्म था ढहाया।

देश हमारा गैर का राज,
सिर अपना, पर नाम का ताज।

भगत सिंह, सुखदेव, गुरू,
किसी अलग दुनिया के वासी।

जात, धर्म, मजहब से दूर,
वो थे केवल भारतवासी।

भारत माँ के लाल वो प्यारे,
असली हीरे मोती न्यारे।

हँसते हँसते दे दी जान,
देश प्रेम जिनकी पहचान।

उन्हें याद करना नहीं काफी,
आदर्शों पर चलना है।

देशप्रेम की चिंगारी को,
यूँ ही सुलगा कर रखना है।

◈◈◈◈

करोना में प्यार कहां?

सुनामी सी आई है लेकर कहर,
करोना की फैली ये दूजी लहर।

कसूर किसी एक का हो तो बताऊं,
यकीनन फ़िज़ा में घुला है जहर।

बेशक हम आप पर दिलोजान से मरते हैं,
माफ़ करना जानम, मुए करोना से डरते हैं।

कुदरत की बनती किश्तें, शायद रह गईं बाकी,
सांसे तो चल रही हैं, नकली हवा करे चालाकी।

हवा में सहमी हलचल, तूफ़ां का ये संदेशा,
सांसे न टूट जाएं, इस बात का अंदेशा।

ये जंग है ज़िंदगी की, जीतेंगे दूर रह कर,
कट जाएंगे ये दिन भी, आवाज़ तेरी सुनकर।

दिल बहल जाएगा, बस नाम तेरा लेकर,
जानेमन, ये दूरी मिलने से लगती बेहतर।

नाक मुंह तो ढक लिया, आँखों की अब है बारी,
ख़ौफ़ज़दा है मंज़र, क्या क्या करे तैयारी।

मिलती हैं नसीहतें, हिदायतें, सलाहें बेशुमार,
बस, नेचर से ही करना है अब तो हमको प्यार।

लौट आएंगी खुशियाँ, ज़रा सा गमों का दौर है,
रहना हमें संभल के, अफ़वाहों का भी दौर है।

◈◈◈◈

कान की व्यथा

हम दोनों हैं जुडवा भाई,
इक दूजे को देख न पाएं।

रहते हैं हम साथ साथ,
पर आपस में मिल न पाएं।

काम हमारा बस इतना था,
सुनना, सुनना, सिर्फ़ ही सुनना।

चुगली गुगली कुछ भी हो,
बस हजम हमें है करना।

दुःख हमारा इतना गहरा,
पर हम किसी से कह न पाएं।

दो मिनट का गर समय हो तो,
प्लीज़ हम अपनी व्यथा सुनाएं।

होम वरक न बच्चे करते,
तुरंत हमें उमेठा जाए।

हम तो बिल्कुल भोले भाले,
फिर भी देखो सज़ा है पाएं।

ऐनक का भी भार है हम पर,
सुंदर गागलज़ भी सज जाए।

फिर भी देखो किस्मत अपनी,
किसी की हम पर नज़र न जाए।

होठों, आँखों, नाक पर लिखे कविता,
शोभा बढ़े चेहरे की, छिदवाए हम जाएं।

गोरी के जब गेसू बिखरे,
सुन न पाए बात तुम्हारी।

स्पीकर का भी भार उठाना,
ये भी अपनी ही जिम्मेदारी।

जनेऊ, पैनसिल, या कोई पुड़िया,
पान पराग, वो भी हमीं संभाले।

कोई न करता बात हमारी,
हैं तो हम सब के रखवाले।

यहां तक तो फिर भी ठीक,
ये मुआ मास्क कहां से आया।

बेड़ा गरक हो चाईना का,
वो भी हम पर लटकाया।

◈◈◈◈

बिग-बॉस

बिग-बॉस को देखकर, आता मन में ख़्याल,
काश, वहाँ मैं जा पाती, मन में रहा मलाल।

कुदरत ने क्या रंग दिखाया, हर घर को बिग बॉस बनाया,
हम सब हो गए घर में बंद, बिग बॉस का लो आनंद।

भागमभागी मची थी हरदम, समय नहीं था किसी के पास,
लो ठहर गया वक़्त ही अब तो, पूरी कर लो मन की आस।

पढ़ो किताबें, चिंतन कर लो, कर लो छूटे थे जो काम,
नभ के कुछ सितारें गिन लो, नहीं तो प्रभु का ले लो नाम।

कोई कर रहा झाडू पोछा, किसी को सूझी कसरत,
मुँह चिढ़ा रहे जूठे बर्तन, पल भर की नहीं फुरसत ।

लगी थी इक होड़ सी, अब जीवन बन गया हादसा,
मरने का जब ख़ौफ़ हुआ तो सूझे कोई ना रास्ता।

'बिग-बॉस' है ऊपर वाला, हम सब तो हैं उसके दास,
ट्रेलर ये तो, फ़िल्म हो कैसी इसका अब हो गया आभास।

न कोई विनर है न कोई लूज़र, सब इनसां हैं एक समान,
स्वच्छ हो नदियाँ, हरी धरा हो, जगमग चमके आसमान।

◈◈◈◈

मेरा भारत महान

बचपन से हम सुनते आए,
मेरा भारत है महान।

झंडा ऊँचा रहे हमारा,
इसी से है अपनी पहचान।

वर्ष अनेकों आज हो गए,
हमको मिले आज़ादी।

मन के अंदर झाँक के देखो,
क्या कुछ पाना बाकी।

मंहगाई, भ्रष्टाचार बढ़ा,
और बढ़ी है बेरोज़गारी।

जातपात के बंधन अभी भी,
गुड़िया निर्भया अभी बेचारी।

हाईवे सरपट गाड़ी भागे,
टावर गगन को चूमे।

एक सड़क तो ऐसी हो,
बेख़ौफ़ बेटियाँ घूमें।

नौनिहाल भारत के देखो,
अभी भी कचरा, कूड़ा बीनें।

ऊँचे महलों को निहारते,
सोने को मिलती टीनें।

मुजरिम कोई न बच सके,
भला मानुष न हो हैरान।

सचमुच तभी कहलाएगा,
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान।

◈◈◈◈

रिश्तों की डोरी

क्यूँ टूटी रिश्तों की डोर,
न पता चला।
प्यार तुमको भी था,
वफ़ा हमको भी थी।
चूक कहाँ हुई,
न पता चला।

रूठे तुम भी,
ख़फ़ा हम भी
मनाया क्यूँ नहीं
न पता चला।
कैसे भूले तुम,
मेरे बदन की गरमी,
महकी साँसों की खुशबू
न पता चला।

वो सोने से दिन,
और चाँदी सी रातें,
कैसे पल में बीते,
न पता चला।
वो गुलाबी रजाई,
वो मेहंदी रचे पांव,
कब बिसर गए,
न पता चला।

तुम बिन मन उदास,
टूट गई हर आस,
कैसे समझाएं इस मन को,
रेगिस्तान में बस प्यास ही प्यास,
किसकी प्यास को कौन बुझाए,
दोनों को न पता चला।

रिश्तों का एक सिरा,
गर मेरे पास था,
तो दूसरा तुम भी थामे थे,
किसने की बेवफ़ाई,
न पता चला।

चलो एक मौका और दें,
उलझे धागे सुलझाएं,
रास्ता कहाँ भटके,
आओ मिल कर पता लगाएं,
शायद पता चल जाए,
उलझे धागे सुलझ जाएं।

◈◈◈◈

बस तूं ही नही

बस तूं ही नही,
तेरा साथ नही,
पेड़ पौधे वही,
हरी घास वही।

पक्षियों का मधुर कलरव,
वो मीठी हवा का झोंका,
हौले से पकड़ा आँचल,
टहनी ने मुझको रोका।

सावन की पहली बारिश,
टप टप सी गिरती बूँदें,
मिट्टी की सोंधी खुशबू,
नैनों से उड़ गई नींदें,

अलसाया सा वो देखो,
क्यूँ चाँद है पुकारे।
मटमैला सा वो बादल,
छुप घटा को निहारे।

जो समझे मेरी अनकही,
वो आँख अब कहाँ,
सहारा दे जो मुझको,
वो हाथ ही नही।

दस्तूर ये जहाँ का,
इक दिन है सबको जाना।
जब आया अपना स्टेशन,
हमको उतर है जाना।

◈◈◈◈

जय श्री राम

अवध में जन्म लियो रघुनाथ,
हर्षित देखो सब नर नारी,
नाचे, दे ढोलक पर थाप।
अवध में ----------

संग संग खेलत चारों भाई,
पग पैंजनिया बाँध।
अवध में --------

मात कौशल्या बलि बलि जाए,
कैकेयी सुमति निहाल।
अवध में -----
दशरथ तात की बात न पूछो,
हर्ष से भर गई आँख।
अवध में ------

विद्या लेने गुरूकुल जाएँ,
महल चौबारे उदास।
अवध में ------

सीता जी ने देखे रघुबीर,
मन में जगी इक आस।
अवध में ----

मंद मंद मुस्काए राम जी,
लखन दिखाए आँख।
अवध में ------

शत्रु भरत दोनों छोटे भाई,
सदा बने प्रभु दास।
अवध में -----

बन बन भटकी जनक दुलारी,
राजमहल दिए त्याग।
अवध में जन्म लियो रघुनाथ।

दीप जलाएँ

दशरथ नंदन अवध पधारे,
आओ मनाएँ दीवाली।
लक्ष्मण सीता साथ में लाए,
आओ मनाएँ दीवाली।

जामवन्त सुग्रीव भी आए,
साथ में हनुमंत वीर को लाए।
अयोध्या में खुशियाँ लौटी,
फिर से छाई हरियाली।
आओ मनाएँ दीवाली---

नन्हे दीपक मुस्काते हैं,
मिलजुल कर यूँ बताते हैं।
राजा राम का तिलक हुआ,
छाई मुख पे छटा है निराली।
आओ मनाएँ दीवाली----

चाईना का सामान न लेंगे,
छोटे चलाएँ पटाखे।
प्रदूषण हम ना फैलाएं,
देश में लाएं खुशहाली।
आओ मनाएँ दीवाली----

दीपक सजाओ, मोमबत्ती जलाओ,
खील पतासे खाओ, वंदनवार लगाओ।
लक्ष्मी पूजन हम सब करें,
सतरंगी बनाएं रंगोली।
आओ मनाएँ दीवाली।

◈◈◈◈

इक खबर

आज फिर इक खबर,
पढ़ मन उदास हो गया।
कूड़े के ढेर में मिली,
नवजात बच्ची की लाश।

उफ़! कैसे इन्सान
बन जाता हैवान,
नहीं कटी गर्भ नाल।
और फेंक दिया जिगर का टुकड़ा
और वो भी कूड़ेदान में।

गर समाज का डर है महान
तो क्यूँ करते हो ऐसे काम,
फिर भी गर है बहुत मजबूरी
और हिम्मत दे गई जवाब।

रास्ते और भी हैं,
कितने घर हैं बेऔलाद,
नहीं हैं घरों में चिराग।
कितने पालना घर,
अनेको मंदिर, गुरुद्वारे।

चुपके से गुमनाम हो कर
भी कर सकते हो यही काम,
अरे वो जहां भी रहेगी
जिंदा तो रहेगी, मिलेंगी दुआएँ
आत्मा का बोझ कुछ कम होगा।

एक प्रश्न मन को कचोट रहा है,
अकसर लावारिस यहाँ वहाँ नवजन्मी
मिलती हैं कन्याएं।
क्या नाजायज़ लड़के
जन्म नहीं लेते, या फिर
वो नाजायज़ नहीं होते?

वैसे भी बच्चे तो
रूप हैं भगवान का
नाजायज़ तो मां बाप हैं,
नवजन्मा फूल नही,
न करो अपमान
कारण कुछ भी हो
बस थोड़ी सी हिम्मत,
घर उसे मिल जाएगा, गुमनाम होकर,
रोशन कर दो बच्चे का जहान।

◈◈◈◈

नया साल

आमद पर नए साल की
मेरे मन में आया एक ख़याल,
दिल किया पूछूं, मैं इससे
कुछ दो चार से सवाल।

स्वागत करके पूछा मैंने
नए साल तुम आए हो,
दामन में कितनी खुशियाँ
कितने उपवन तुम लाए हो।

सूखा, सुनामी, बाढ़, बलात्कार
सब पीछे छोड़ तो आए हो,
सुरक्षित रहे बेटियाँ, पर्यावरण
क्या कोई नुस्ख़ा लाए हो।

बहुत सी आशाएँ हैं तुमसे
धरती पर हर इन्सान की,
अमन चैन बनाए रखना
चले न किसी शैतान की।

सिर हिला कर बोला वो,
मैं भी बस खुशियाँ चाहता हूँ,
रहे सलामत सारी दुनिया
यही दुआ मनाता हूँ।

कुदरत के नियमों को मानो
सही गलत में अंतर जानो,
वैर विरोध को दूर भगाओ
स्नेह प्यार के दीप जलाओ।

करता हूँ वादा मैं सबसे
किसी को नहीं सताऊँगा ,
गलत काम कोई तुम न करना
तभी मैं वचन निभाऊँगा।

कुदरत की नाराज़गी

ये हवा में इतना ज़हर कहाँ से भर गया,
प्रकृति के सबर का, प्याला छलक गया।

उत्तरांचल की भूमि पर टूटा ये कैसा क़हर,
हरी भरी सुंदर वसुंधरा, हो गई बंजर।

बह गए पेड़ पौधे, बचे न कोई बगीचे,
खिलौनों से ढहे घर, गुम हुए दरीचे।

कीड़ों, मकोड़ों की तरह इन्सान बह गए,
अंतर रहा न, अमीर, गरीब सब एक हो गए।

कुछ सोए सोए डूब गए, कुछ कारों समेत बह गए,
कुछ घाटी में समा गए, कुछ पत्थरों में दब गए।

झूठे पड़े मौसम के हाल, सच न हुई भविष्यवाणी,
कुदरत के अनवरत दोहन की, क़ीमत पड़ी चुकानी।

दाता ने जो किया, वो सब समझ में आया,
पर इन्सानों ने भी कम क़हर नहीं बरपाया।

दाम वसूले मनमाने, बेची सोने के भाव में रोटी,
लूट मचाई जी भर कर, असमत भी कर दी खोटी।

मजबूर इन्सानों, लाशों की बेबसी का लाभ उठाया,
इन्सानियत से गिर गए, भूल गए क़ानून क़ायदा ।

जिंदा रह कर भी तुम वो नज़ारा कैसे देख पाओगे,
लाशों से उतारे गहने घर की औरतों को पहनाओगे।

धन्य हैं वो वीर जवान, वो हैं भारत माँ की शान,
परवाह न की अपनी, बचाई सैकड़ों की जान।

चढ़ाती हूँ श्रद्धा सुमन मैं उन वीर जवानों को,
सदबुद्धि देना भगवन, धरती के शैतानों को।

मत खुश हो ए इन्सान!, कूट कर प्रकृति से चाँदी,
अभी तो दिख रहे हैं ट्रेलर, फिल्म पड़ेगी महंगी।

26 जनवरी – गणतंत्र दिवस

नहीं भूलेंगे ये दिन, ये साल, ये ख़ुशी, ये महीना,
जब फिर से सीखा हमने, अपनी ही शर्तों पे जीना।

कहलाता था देश मेरा सोने की चिड़िया,
ये तो था सब देशों के माथे की बिंदिया।

आपसी फूट का गैरों ने फिर ऐसा लाभ उठाया,
मेरे प्यारे भारत को सदियों गुलाम बनाया।

लुटेरे तुगलक, लोधी, बलबन, गौरी और सिकंदर,
जयचंद जैसे देशद्रोही छुपे हुए थे घर के अंदर।

मुग़ल, इल्तुतमिश, सूरी आया, और आया चंगेज़,
डच, फ्रेंच, पुर्तगाली आये, फिर आया अंग्रेज़।

अंग्रेज़ों ने आकर फिर तो कुछ यूँ डेरा जमाया,
जम कर लूटा भारत को, सिक्का अपना चलाया।

खौला ख़ून फिर देशभक्तों का, आगे बढ़ते आए,
खदेड़ भगाया विदेशियों को, अपने शीश कटाए।

कुर्बानियों से मिली आज़ादी, अब उसे नहीं खोना,
संजो कर रखना गणतंत्र, फूट का बीज न बोना।

◈◈◈◈

भूदान

संत बहुत से सुने हैं सबने
सभी ने किए थे काम महान,
लेकिन एक संत था ऐसा
जिसने माँगा था भूदान।

अपने लिए तो कुछ न माँगा,
समाज सेवा का ही था ध्यान।
काम अनेकों किए उन्होंने,
उनमें एक था ग्रामदान।

भगवत गीता से प्रभावित
दामन थामा गांधी का,
कड़ी निंदा की गौ हत्या की
किया सामना तूफ़ान आँधी का।

सब भूमि गोपाल की,
ये था उनका नारा।
जय जगत वो हरदम लिखते,
हर धर्म था उनको प्यारा।

सखोदय आधार बनाया,
मतलब जिसका है उत्थान।
कार्यक्रम तो बहुत किए,
पर सबसे मुख्य था भूदान।

भूदान आंदोलन अद्भुत,
पूरे देश का भ्रमण किया
संत ने दान में माँगी भूमि,
भूमि विहिनों में फिर बाँट दिया।

लिख डाली फिर कई किताबें
कई भाषाओं का था ज्ञाण,
चकाचौंध से दूर रहे वो,
धरती पर भगवान समान।

बसंत ऋतु

बसंत रूत देखो आई सखी री,
बसंत रूत आई,
उड़ गया पाला, छाई मस्ती,
मौसम ने ली अंगड़ाई सखी री
बसंत रूत आई---

पीली पीली सरसों फूली,
पीला हमारा आँचल
नीली पीली चिड़िया चहके
छुटपुट घूमे बादल,
बरखा की हुई बिदाई सखी री
बसंत रूत आई---

रंग बिरंगे फूल खिले देखो,
भँवरे गुनगुन गाएँ,
ऋतुराज के स्वागत में सखी
शीतल पवन लहराए।
उड़ उड़ जाए मस्त पतंगें
नभ को ये छू आएं---

बसंत रूत देखो आई सखी री
बसंत रूत आई।

◈◈◈◈

हरियाली हो चहुँ ओर

आओ बैठ कर करें विचार
ज़रूर लगाएं पेड़ दो चार,
छाया ठंडी हो जिसकी
पक्षी करें तकरार।

फलों से वो लदे हों,
ख़ुशबुओं की हो बहार
राही को छाया मिले
भूखों को मिले आहार।

ठंडी जब पवन चले,
सुरमयी बजे सितार
पत्तों से छनती धूप देख
दिल धड़के, करे मनुहार।
प्रकृति तो बस देती है,
मानव भी नहीं लाचार
सिर्फ़ क़र्ज ही तो चुकाना है,
हम पे है जितना उधार।

हरियाली हो चहुँ ओर,
पत्तों की हो झंकार
सुरक्षित हो वन्य जीवन
धरती की है ये पुकार।

◈◈◈◈

जितना साथ मिले

जितना जिसका साथ लिखा है,
उतना ही मिल पाता है।
कितनी भी तुम कोशिश कर लो,
घट या बढ़ नहीं पाता है।
जितना जिसका साथ-------

सोच के निकले, साथ चलेंगे,
मंज़िल तक हम मिल के रहेंगे।
हल्के से बस इक झोंके से,
सब कुछ बिखर क्यूं जाता है।
जितना जिसका साथ --------

कसमें वादे वचन वफ़ाएं,
प्यार के पल जो साथ बिताए।
रह जाती बस यादें उनकी,
बाक़ी सब गुम जाता है।
जितना जिसका साथ-------

ये दुनिया तो रैन बसेरा,
न कुछ तेरा, न कुछ मेरा
झूठी शान में मत रहना,
कभी कुछ भी साथ न जाता है।
जिसका जितना साथ-----

प्यार के जितने भी पल मिलते,
जी लो उनको, सब जी भर के
हँसी, खुशी में जो पल बीते,
याद वही रह जाता है।
जिसका जितना साथ----

प्यारे पलों की कदर न पाएं,
लड़ते झगड़ते समय बिताएं।
थम जाती जब सांसे तब हमें,
याद हर इक पल आता है।
जिसका जितना साथ-----

तुम नहीं आए, मैं भी न आई
गिले शिकवे में रैन बिताई।
जो भी है, बस इक यही पल है,
बाकी अफ़साना बन जाता है।
जिसका जितना साथ-----

◈◈◈◈

पुलवामा के शहीद

कुछ बैठे कुछ सोए थे,
कुछ वेलेंटाइन के सपनों में खोए थे।

किसी की यादों में थी गजरे की खुशबू,
तो किसी के सपनों में थी वेणी की महक।

कोई याद कर रहा नन्ही परी की किलकारी,
तो किसी पर थी माँ की पकी रोटी की खुमारी।

किसी ने लिया था वचन बाप का क़र्ज चुकाने का,
कोई करके आया वादा, बहन की माँग सजाने का।

चले जा रहे थे रफ़्ता रफ़्ता भारत माँ के वीर,
कुछ कर दिखाने का जज़्बा, मन में ले शमशीर।

लगा अचानक झटका, छुप कर हो गया वार,
खेल ही खेल में मित्रों का तोड़ दिया एतबार।

कश्मीर ऐसी सुंदर नारी, जिसके दिल में खोट,
मत करो दीदार उसका, कर दो बाईकाट।

हिस्सा तो है भारत का वो सड़ चुके उसके अंग,
कड़वी दवा पिलानी होगी, गर चाहिए उसका संग।

दो साल, मत देखो, धरती का ये स्वर्ग,
शिमला, ऊटी हो आओ, और भी है गुलमर्ग।

माना अहिंसा परमोधर्म है, अब ये बात हुई बेमानी,
खत्म हुई सहने की सीमा, नहीं चलेगी मनमानी।

जो जैसी भाषा समझे, उसको वही समझाना,
बैरी के अड्डों में घुसकर करतब अपना दिखलाना।

14 को मारे चालीस, 27 को बदला चुकाया,
घर में जाकर 300 मारे, एक भी बच न पाया।

भारत मां के अमर शहीदों को दी श्रद्धांजली,
क़र्ज़ पूरा चुकाया, कर तेरहवीं फ़र्ज़ निभाया।

◈◈◈◈

हिंदी दिवस

मखमली शब्दों में लिपटे,
ये मेरे अहसास।
दिल के मेरे क़रीब हैं,
बहुत ही बेहद ख़ास।

गुणगान करे हिंदी का,
ये हमारी पहचान।
इसी से है दुनिया में,
हिंदुस्तान का नाम।

ख़ूबसूरती हिंदी की,
देख तबियत डोली।
मनभावन मात्राओं की,
स्वर व्यंजनों की टोली।

सिरफ' र' की बात करें,
कितने इसके रूप।
कभी करे झुक कर प्रणाम,
तो कभी बने त्रिशूल।

श्रद्धा सुमन भी यही चढ़ाए,
त्रिषी मुनी भी यही मिलाए।
राष्ट्र का सम्मान बढ़ाए,
मिलजुल कर हम पर्व मनाएं।

इक सूत्र में बँधा है भारत,
हिंदी का ये तो पर्याय।
पंजाब, कश्मीर, असम,
या फिर हो मेघालय।

हिंदी तो माथे की बिंदी,
जन जन की ये बोली।
वाणी ये तो अरबों की,
वीणा के तारों सी, सुर सप्तक रंगोली।

दिल में

दिल में छुपी हैं मेरे आज तलक,
हज़ारों बिजलियाँ, रोशनियाँ, चिंगारियाँ।

उठाई हैं मैंने ता उम्र,
मुश्किलें, कठिनाइयाँ, दुश्वारियाँ।

ज़िंदगी को करती रही खराब हमेशा,
हमारी ही हसरतें, मजबूरियाँ, लाचारियाँ।

किस्मत में लिखी हैं अपनी ये सौगातें,
बेवफ़ाईयां, नफ़रतें, मक्कारियां।

जितनी भी कर लो कोशिशें, नहीं रहती इश्क़ में,
मनचाही इज्जतें, बढ़ाईयां, सरदारियां।

चाहा बहुत, मगर छुपा न सके,
अपने बहते हुए आँसू, आहें, सिसकारियां।

मान के चलो, ये सब लाईलाज है,
वहशतें, मगरूरियां, बदकारियां।

सब लुटने के बाद बनी ये गज़ल,
कहते हैं लोग सन्नतें, उस्तादियां, फ़नकारियां।

◈◈◈◈

दिल में मुझको

मुझको दिल में बसाया तो होता,
गीत प्यार का गाया भी होता।
बाग से कलियां क्यूं चुनती हो,
मन का फूल खिलाया तो होता।
बादल बरसे, छाया अंधेरा,
मन मंदिर में रहता सवेरा।
बाहर मुझको ढूंढ रहे थे,
दीपक दिल का जलाया तो होता।
मुझको दिल में-----

रात अंधेरी या हो उजरी,
कटती नहीं जब दिल हो भारी।
चांद को तकते बीती रैना,
तारों को साथी बनाया तो होता।
मुझको दिल में-----

चैन नहीं था, थी बेकरारी,
इक इक लम्हा लगता था भारी।
आंसुओं से ही भीगा हुआ तब,
इक ख़त ही पहुंचाया तो होता।
मुझको दिल में-----

◈◈◈◈

बूढ़ी काया

वो ख़ुशियों भरा सवेरा,
शीश पे सजा था सेहरा।

ले, ले, बलाएँ चांद की,
मन भरता नहीं था मेरा।

मन करता, आँखों में बसा लूँ,
वो तेरा सुंदर मुखड़ा।

नज़र ना लगे किसी की,
वो मेरे जिगर का टुकड़ा।

ख़ुशियों की घड़ी आई,
महका मेरा भी अँगना।

कभी बाजे रुनझुन पायल,
और खनके खन-खन कंगना।

मन पंछी पहुँचा पीछे,
यादों की लड़ी आई।

मेरे लिए भी कभी किसी ने,
सुंदर थाली थी सजाई।

मन में बसी ख़ुशियां,
पूरे हुए अरमान।

खुली आँखों देखे सपने,
मैं थी कितनी नादान ।

लुटा दी सारी दौलत,
प्यार का झरना भी बहाया।

दो बोल मुहब्बत के सुनने को,
तड़पे मेरी बूढ़ी काया।

हर रोज़ सुबह होती,
सूर्य किरण लाती है सवेरा।

मन मेरा रहता सूना,
मेरे हिस्से में है अंधेरा।

सब मस्त हैं अपने में,
जग लगता है पराया।

चली थी बेगानों को अपनाने,
अपनों को भी गँवाया।

दिल हो गया बच्चा,
पर हो गई बूढ़ी काया।

◈◈◈◈

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नसीब से मनाया हमने, आज़ादी अमृत महोत्सव,
सालों साल चले यूँ ही, अनेकों ऐसे उत्सव।
भूख का मतलब भूखा जानें,
प्यास को जाने प्यासा।
श्रम क्या है, ये श्रमिक से पूछो,
बेकार है झूठा दिलासा।

आज़ादी में साँस ली जिसने,
वो क्या जाने गुलामी।
कैसे मिली आज़ादी हमको,
पढ़ना ये पूरी कहानी।

ख़ुशक़िस्मतों का जन्म हुआ,
और हमको मिली आज़ादी।
ख़ून बहा शहीदों का,
हुई बहुत बरबादी।

अब कोई जाति धर्म नहीं है,
न कोई आधीन है।
महिला द्रोपदी मुर्म आदिवासी,
उच्च पद पर आसीन है।

उन्मुक्त लहराए तिरंगा,
सबको मिले हर सुख।
ज़रूरतें सदा ही पूरी हों,
पास न फटके कोई दुःख।

◈◈◈◈

प्रण

हम सब को देना है वचन,
काटेंगे नहीं पेड़ और वन।

पौधों को समय पे देना पानी,
गर है अपनी जान बचानी।

प्लास्टिक का बंद करें चलन,
सुरक्षित रहेगा पर्यावरण।

ऋतु में मेघा जल बरसाए,
भू स्तर कभी न गिरने पाए।

हम सब हाथ में रखें थैले,
यहां वहां गंदगी न फैले।

पशु, पक्षियों में भी जान,
उन सब का भी रखें ध्यान।

गलियां पार्क रखना साफ़,
बीमारी को गर देनी मात।

पानी को भी बचाना है,
बेकार नहीं बहाना है।

गर हम सब कर लें ये प्रण,
स्वच्छ रहेगा वातावरण।

बातें छोटी, बड़ा है ज्ञान,
मेरा भारत बने महान।

◈◈◈◈

आसां नहीं राधा होना

हम सब जपते राधा शाम,
हर कोई जपता राधा नाम।

राधा ने जग छोड़ दिया,
मोहन से नाता जोड़ लिया।

कभी कभी बंसी से जलती,
सौतन सी वो उसको लगती।

जमुना तीरे बेसुध रह कर,
कान्हा की वो राह निहारे।

मिल न सके कभी राधा शाम,
जग में फिर भी उनका नाम।

कान्हा संग राधा ही साजे,
मुरली की वो तान सी लागे।

सच्चा प्रेम देना ही जाने,
रिश्तों के बंधन न माने।

मीरा भी थी शाम दीवानी,
विष पीकर भी वो न मानी।

सच्ची लगन लगी हो जिसको,
प्रभु भक्ति बस मिलती उसको।

◈◈◈◈

अमन-चैन

युद्ध और जंग से, मची है हाहाकार,
कभी तो बाज़ी हारोगे, मत करो अहंकार।

अमन चैन जब रहेगा, तो होंगे सब खुशहाल,
जीओ और जीने भी दो, क्यूं करते हो बवाल।

हिंदुस्तान या पाकिस्तान, चीन हो या जपान,
नेताओं को मतलब नहीं, आवाम् की जाए जान।

क्यूं कर रहे असले पर करोड़ों रूपया बरबाद,
मानवता अनमोल है, रहने दो उसे आबाद।

कुदरत की जब मार पड़ी तो नहीं चलेगा ज़ोर,
बुरे कर्मों की काली रात की, होगी न फिर भोर।

नेपोलियन हो या सिकंदर, रावण हो या कंस,
कोई अमर न हो पाया, हो गया सबका अंत।

चार दिन की ज़िंदगी, हंस कर लो गुज़ार,
गिले, शिकवे, शिकायतों का डाल दो आचार।

कब्र में अलमारी नही, कर लो ये विचार,
कफ़न में कोई जेब नही, क्यूं करते अत्याचार।

◈◈◈◈

मेरे हिस्से का आसमान

औरत हूं मैं, मान है मुझे,
कोई कुछ भी कहे
स्वाभिमान है मुझे।

    कुदरत की सुंदर रचना
    फूलों सी मैं हूं कोमल,
    धरती की सोंधी खुशबू
    पवन सी मैं चंचल।

तितली सी मेरी रंगत
चिड़िया सी मैं चहकती,
नदिया सी मैं मचलती
सृष्टि को मैं ही रचती।

    ना ही मैं हूं अबला
    और ना हूं मैं बेचारी,
    चंडी हूं, दुर्गा हूं मैं
    सब पर हूं मैं तो भारी।

इक दिन है नाम मेरे
इस पर हूं मैं अभारी
इक वचन चाहिए आपसे
वो नर हो चाहे नारी।

    आने दो मुझको जग में
    बस इक यही वरदान चाहिए,
    बोझ,अनचाही, पराया धन नही मैं
    मुझको मेरे हिस्से का आसमान चाहिए।

◈◈◈◈

प्रवास

अपना देश सोने की चिड़िया,
कभी इसको छोड़ मत जाना,
घूमने फिरने पर कोई रोक नही,
पर अपना असली यही ठिकाना।
          अपने फिर भी अपने होते,
          कभी बात ये भूल न जाना,
          परदेस में रह कर भी हमेशा,
          अपने वतन का चंदन लगाना।
विदेश जाना बुरी बात नही,
मगर, सही ढंग से ही जाना,
एजेंटों के जाल में फंसकर,
अपनी जान को नहीं गंवाना।
          जमीन, जायदाद बेचकर अपनी,
          दूर, बहुत दूर, परदेस चले तो जाते,
          बूढ़े मां बाप, परिवार के आंसू,
          बहते रहते, कभी भी सूख न पाते ।
रोटी मुफ़्त कभी कहीं न मिलती,
जी जान से मेहनत करनी पड़ती,
कुछ कमियां हर जगह हैं होती,
सिर्फ़ सोच बदलनी पड़ती।
          काम कोई भी घटिया नहीं,
          उसे यहां भी करके देखो,
          दूर से चांद भी सुंदर लगता,
          ज़रा पास में जाकर परखो।
भारत देश की परंपराएं,
आज भी हैं बेजोड़,
राम कृष्ण की इस धरती सा,
कहीं नहीं कोई और।

◈◈◈◈

भया उजारा

रात अमावस की रोशनाई,
हो गया दूर अंधेरा।

कोना कोना जगमग जगमग,
लागे ज्यूं सवेरा।

नन्हें नन्हें दीपक चमके,
आपस में वो मिल के दमके।

राम लखन जी घर को आए,
सीता मैया संग में लाए।

कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा,
देख देख कर मन हर्षाए।

भरत, शत्रुघ्न भाग के आए,
भाईयों के वो अंक समाए।

अश्रु अविरल बहते जाएं,
रोकना चाहें, रोक न पाएं।

मंथरा शर्म से डूबी जाए,
कैसे अपना मुख दिखलाए।

राम ने जा कर उसे उबारा,
नियति का ये खेल है सारा।

हुआ दूर तम भया उजारा,
अद्भुत अजब है अब ये नज़ारा

◈◈◈◈

पति-पत्नी

हमारे जमाने में पति-पत्नी में,
सेवा, त्याग, समर्पण और प्यार था।
तेरा मेरा न होकर, हमारा था,
थोड़ी बहुत नोकझोंक, रूठना मनाना,
मामूली सा तकरार था,
मगर ढ़ेर सारा प्यार था।

जो शौहर कमाकर लाए,
बीवी उसी में घर चलाए।
सास ससुर जेठ मां बाप से,
ननद देवर बहन भाई समान।
रिश्तेदार पास पड़ोसी सब अपने,
ससुराल परिवार ही अपना संसार था,
हर तरफ़ बस प्यार ही प्यार था।

हम नाम से नहीं बुलाते थे,
जानू, हनी, हब्बी के अर्थ नहीं समझते थे।
आंखों ही आंखो में बातें करते,
घूंघट की ओट के इशारे से बुलाकर,
हम दिल की बात बताते थे।
इशारों ही इशारों में नाज़, नखरे,
और मोहब्बत का इज़हार था,
उस ज़माने में बहुत प्यार था।

छोटी छोटी बातों का,
बतंगड़ नहीं बनाते थे,
घर के झगड़े मिलजुल कर,
हम घर में ही सुलझाते थे।
'तलाक' शब्द कलंक लगता था,

रिश्तों में व्यापार नही था,
डांट डपट के भीतर भी,
छुपा हुआ कहीं प्यार था।

गर पत्नी काम पे जाती तो भी,
हम काम नहीं बांटते थे,
कमाई भी सांझी थी, ख़र्च भी एक थे,
दो कमरे हों या चार,
मां-बाप, दादा-दादी,
सब मिल धुनी रमाते थे।
वृद्ध आश्रम का नाम नहीं था,
सर पर बुजुर्गों का आशीर्वाद था,
तब प्यार प्यार और बस प्यार ही था।

◈◈◈◈

साथ नहीं चाहिए

नहीं चाहिए, किसी का साथ नहीं चाहिए,
मतलबी लोगों का तो बिल्कुल भी नहीं।

उफ़ गिरगिट भी क्या रंग बदलता होगा,
उससे ज़्यादा तो आज रिश्ते रंग बदलते हैं।

पल में रत्ती, तोला, तो कभी माशा,
सच में ये दुनिया है बस इक खेल तमाशा।

लेकिन तमाशा भी इमानदारी से होता है,
रिश्तों में तो सिर्फ़ दिखावा ही रह गया है।

हाल पूछने आएंगे और बेहाल करके जाएंगे,
एक के बाद एक सवाल करते जाएंगे।

सारे जहां का दर्द तो जैसे उन्हें मिला है,
तबियत और भी नासाज करके जाएंगे।

रिश्ते तो सिर्फ़ हैसियत पूछते हैं,
बच्चे आजकल के वसीयत पूछते हैं।

सच तो आज का फ़क़त इतना ही है,
चंद दोस्त ही हैं जो सिर्फ़ तबियत पूछते हैं।

दोस्तों से मिल कर चेहरे पे खुशी आती है,
कुछ पल ही सही, रंगीन घटा छाती है।

फिर वही शाम, पुरानी यादें, वही तन्हाई,
अगले दिन के इंतज़ार में रात गुज़र जाती।

◈◈◈◈

भरा-मन

मन हो भरा,
और खालीपन ब्यां करना।

दिल में ज़ख़्म हो,
पर खोखली हंसी हंसना।

अंदर समुद्र हिलोरे ले रहा,
और ऊपर से शांत दिखना।

आंसू बहने को बेकरार,
उन्हें पलकों पर रोक के रखना।

भीतर आग लगी हो,
पर धुआँ निकलने न देना।

सबसे मुश्किल घड़ी है वो,
यार मज़ार पर आए।

साथ में गैर को लेकर,
दफ़न हुए का फिर से जलना।

कितना मुश्किल है,
उफ़, कितना मुश्किल है।

◈◈◈◈

तेरे बिन

ऐसा नहीं कि अब ज़िंदगी में कोई ख़्वाब नही,
कैसे पूरा करूं कि जब उनमें तूं नही।

दौलत शौहरत की तो कोई कमी नही,
मगर तेरे बिना उसकी कोई चाहत ही नही।

रंग चटख अब भी वैसे ही है,
बिन तेरे अब उनमें रंगत सी नही।

कल रात पूछा बदली ने, बरस जाऊं,
मरज़ी है तेरी, हो सके तो अगले मुहल्ले जा,
तेरी बूंदों की यहां अब कोई वुक्कत ही नहीं।

उसने फिर भी शीशे पे बना दी पेंटिंग,
तेरे अक्स से मिलती जुलती,
आँख उठा के देखने की अब हिम्मत ही नही।

ऐसा नही कि अब चांद सितारे नहीं निकलते,
मगर अब मैं सितारों को गिनती ही नही।

सावन आए या जाए क्या फर्क पड़ता है,
जब बूंदों में तेरी खुशबू ही नही।

ऐसा नहीं कि अब रस अंगूरी नही,
मन मेरे में ही रही कस्तूरी नही।

आँखों ने बंद कर दिए अब ख़्वाब देखने,
कैसे ख़्वाब जब उनमें तूं ही नही।

◈◈◈◈

फरियाद

जिनको चाहिए भगवन उनको महल चौबारे देना,
मुझको तो अपने चरणों में भगवन तुम रख लेना।

हर सुबह तेरे दर्शन पाऊं, तेरी आरती हरदम गाऊं,
जाति धर्म के भेदभाव से मुझको कुछ नहीं लेना।

धरा है भगवन मेरा बिछौना, नभ को ओढ़ के मुझे है सोना,
कंद-मूल फल खाकर मैने राम नाम जप लेना।

सुखी रहे कुल दुनिया सारी, आबाद हो मेरी फुलवारी,
बच्चों के मन में दाता तुम भक्ति भाव भर देना।

दुनिया तो है रैन बसैरा, जाने कब हो आखिर सवेरा,
आँखें जब हों बंद मेरी प्रभु दर्शन हो बस मुझको तेरा।

खाली हाथ है हमको जाना, सब कुछ सबका यहीं रह जाना,
क्यूं करते फिर हेरा फेरी, जब कुछ भी नहीं साथ है जाना।

भगवन तो बस प्यार के भूखे, जूठे बेर न लगते जूठे,
खेवट की तरह ही मुझको भवसागर से पार कराना।

जिनको चाहिए भगवन उनको महल चौबारे देना,
मुझको तो अपने चरणों में भगवन तुम रख लेना।

◈◈◈◈

मां दिवस

कैसे कहूं आज मां का दिन है,
कौनसा दिन मां के बिन है।
दुनियां से नाता जुड़ने से पहले,
मां से नाता जुड़ जाता है।
जो मां खाए, वो भी वही खाता है,
हंसना, बोलना, चलना, संभलना
सब मां से ही सीख पाता है।
बिन मां के कौन अपना दूध पिलाता है,
दुःख में मुख से पहला शब्द,
मां ही निकल पाता है।
मां तुलसी सी, मां पीपल भी,
मां बोहड़ भी, मां शीतल भी,
गलती पर कड़वा करेला भी,
खुशी में रंगों का मेला भी,
व्यवहार भी मां, संस्कार भी मां,
मान भी मां, अभिमान भी मां,
उत्सव, आस्था, धर्म भी मां,
हर चोट की मरहम भी मां ।
मां से गीत कविता संगीत है
आँखों, चेहरे से सब पढ़ ले,
इक मां ही ऐसा मीत है।
मां निर्मल स्नेह की धार है,
मां ईश्वर का अवतार है।
मां है गर रसोई में तो आठो पहर,
पकवानों की बहार है।
खुशबू है मसालों की,
और बरनी में आचार है।
जिस के सिर पर हाथ मां का
वो खुशकिस्मत इन्सान है।

न जाने क्यों

हम रोज़ मिलते हैं
न सही ताजमहल,
शहर से बाहर पुराने किले की छत पर
बैठे रहते हैं घंटों, गुमसुम, अलसाए से
मन रोज चाहता है, कुछ बातें हों
बेमतलब यूं ही वादे हों
आसमां तक सीढ़ी लगाने की
कभी चांद तारे तोड़ लाने की
कभी बादलों में छुपने की
कभी हाथों में हाथ डाल बारिश में भीगने की
कभी तुम कहो, मैं बला की हसीन हूं
या फिर मैं कहूं तुम कैसे बांके नौजवान हो
बस ऐसे ही, वैसे ही बेसिर पैर की बातें
मगर बात कुछ होती नहीं
या यूं कहो कि बात क्या हो,
कोई सिरा मिलता नहीं।
बहुत अन्तर है ख़्वाबों और हक़ीक़त में
एक होना चाहकर भी शायद न हो पाएं
कुछ उसकी मजबूरियां, कुछ मेरे दायरे
बहुत सी सामाजिक वर्जनाएं तो कुछ आशंकाए
फिर भी न जाने क्यों, फिर भी न जाने क्यों।

◈◈◈◈

मां

सब कुछ खरीद कर भी,
मां सा प्यार न खरीद पाओगे,
ये प्यार बिकता नहीं बाजार में,
सब खरीद लोगे पर मां का आशीर्वाद न ले पाओगे।

मत दुखाना मां के दिल को,
वो कभी बद्दुआ नहीं देगी,
मगर उसके दिल से निकली ठंडी सांस,
तुम्हें जीने तो क्या चैन से मरने भी नहीं देगी।

सबसे पहले जुड़ता है नाता मां से,
मिलता है आहार मां के ही लहू से,
टुकड़ा हो मां के दिल का,
कैसे उसे भुलाओगे।

भूखी रह कर भी मां बच्चे को खिलाती है,
हाथों के पालने में हर पल उसे झुलाती है,
वो बोझ कैसे बन गई,
चलना जिसने सिखाया।

अगर कहीं मां की आंखों से आंसूं गिर गए तो,
बहुत बुरा होगा
यकीं मानिए, आपके पास सब कुछ होगा,
पर दिल को सकूं न होगा

कई बार गिरते है,
संभलते है
अरे मां की दुआ हर पल साथ है
तभी तो बिगड़े काम बनते।

◈◈◈◈

योग

आओ योग को हम अपनाएं,
गहना समझ के गले लगाएं।

सुंदर स्वस्थ जो चाहो रहना,
योग कर लो भाईयो बहना।

ऋषि मुनियों ने हमें बताया,
योगा का हर आसन सिखाया।

तन को योगा सुंदर बनाए,
मन को भी धीरज आ जाए।

निसदिन योगा जो अपनाए,
दुःख पीड़ा फिर न उसे सताए।

सादा भोजन, संयमित जीवन,
उसकी दिनचर्या बन जाए।

सदाचार, सुंदर व्यवहार से,
सबका मन पुलकित कर जाए।

सुबह सुबह उठ के सैर को जाए,
शुद्ध ऑक्सीजन भर भर पाए।

रोग, पीड़ा से बचे रहें हम सब,
बेहतर पाचन तंत्र भी पाए।

21 जून योग दिवस मनाएं,
लेकिन इसको रोज़ अपनाएं।

दीर्घ आयु और सुंदर काया,
हंस हंस जीवन का लुत्फ़ उठा।

◈◈◈◈

थोड़ी छांव

थक चुकी हूं ताउम्र चलते चलते
ज़रा सी छांव मिले तो
ठहर जाऊं।

यूं तो ज़िंदगी ने बहुत कुछ दिया,
ज़रा सा सहारा मिले तो
संभल जाऊं।

उखड़ी रहती है मेरी सांसें हरदम,
कभी ठंडी हवा का झोंका मिले तो मैं
प्यार का गीत गाऊं।

सावन आता है, जाता है,
कोई बदली बरसे मेरे आंगन तो
भीग भीग जाऊं।

राही तो मिलते हैं बहुत आते जाते
कोई कांधा मिले तो,
दुःख सुनाऊं।

घने पेड़ों की छाया तो है हर तरफ़
किसी जुल्फ़ का साया मिले तो
महक जाऊं।

वैसे तो मयखाने नहीं जाना मुझे
कोई आँखों से पिलाए तो बहक जाऊं ।

◈◈◈◈

मालगाड़ी

अब तो उमर हुई कुछ ऐसी,
पटरी पर मालगाड़ी जैसी।

खड़ी लाईनों पर बन अनजान,
गंतव्य का नहीं बिल्कुल ज्ञान।

बुढ़ापा भी मालगाड़ी जैसा,
किसी को उसकी फ़िक्र नही।

बचा खुचा मिलना है उसको,
पर उसका भी ज़िक्र नही।

तजुर्बा बरसों का उसके पास,
पर किसी को इसकी चाह नही।

दर बदर भटकते फिरते हैं,
अपनों से पूछते राह नही।

फालतू सामान की तरह ही,
पालक पड़े रहते हैं एक तरफ़।

तरस जाते वो दो मीठे बोलों को,
जैसे मालगाड़ी तरसे पानी कोयलों को।

◈◈◈◈

मेरा वजूद

इक बीज समान था मेरा वजूद,
दबी पड़ी थी अंधेरी मिट्टी में।

गुम हो जाती दुनिया के रेले में,
भटक जाती भीड़ और मेले में।

दिखाई दी नन्ही सी रोशनी की इक किरन,
बदलता गया फिर मेरा तो सारा जीवन।

राह कठिन थी गिरी भटकी मैं अक्सर,
अडिग रही, न छोड़ा मैंने भी कोई अवसर।

किस्मत अच्छी थी, मिला खूब खाद पानी,
मुश्किलें आईं, पर मैंने भी आगे बढ़ने की ठानी।

हुई बहुत बार टांग खिंचाई, अड़चने भी आई,
पर अर्जुन सी आँख, मैंने भी विरासत में पाई।

दूर हुआ हर अंधेरा, मिला नया सवेरा,
नज़र हो मंज़िल पे, कोई रोक सकता नहीं।

रोशनी होती है विद्या, खाद पानी परिवार,
दोनों का मिले साथ तो सुखी हो संसार।

◈◈◈◈

मिशन चंद्रयान-3

मिल गई वो चांद को राखी,
भेजी थी विक्रम के हाथ।

　　हल्के से उतरा विक्रम,
　　चांद के सुंदर आंगन में।

गले लगाकर बोला फिर वो,
आ गया तुमसे मिलने मैं।

　　साध हुई बरसों की पूरी,
　　लगा रहेगा आना जाना।

एक नई इबारत बन गई,
रचा गया नया इतिहास।

　　वहां तिरंगा फहराएगा,
　　अशोक सतंभ भी होगा साथ।

महबूब किसी का, किसी का भाई,
और किसी का मामा चंदा।

　　आधा पूरा जैसा भी हो,
　　सबके मन को भाता चंदा।

◈◈◈◈

जागो नारियो जागो

जागो, उठो नारियो,
खुद लड़ो अपनी लड़ाई,
रणचंडी बन जाओ,
नहीं सहनी अब और
बेगैरत मर्दों की बेहयाई।
निकलो घर से बाहर,
जब बेटी बहन पुकारे
बेशर्म मर्दों को दिखाओ
मिल सब दिन में तारे।
झगड़े भूलो अपने,
बस इकजुट हो जाओ।
अपनी जात की अस्मत को
अब तुम खुद ही बचाओ।
तुम हो ईश्वर की अद्‌भुत रचना,
तुम में ही नर है पनपता,
मिटा दो वजूद से अपने
'विशेषण' बेचारी का।
नारी ही जब नारी की
कवच बन कद्र करेगी,
भ्रूण हत्या हो, बलात्कार, या
मणीपुर जैसी शर्मनाक घटना
फिर जग में नहीं घटेगी।
मत करो इंतज़ार कृष्ण का,
हर मोड़ पे है दुर्योधन
द्रौपदी की लाज बचाने
कलयुग में कोई नहीं आएगा।
इक जुट हो जाए गर नारी शक्ति,
कोई रावण नहीं सताएगा,
चिमटा, बेलन ही बहुत है,
साड़ियों का ढ़ेर लग जाएगा।

अकेली

किसी ने पूछा,
अकेली हो क्या?
मैंने कहा, बिल्कुल नहीं।
मेरे साथ मेरे विचार हैं,
परिवार से मिले संस्कार हैं।
भीतर ज्ञान का भंडार है,
हिलोरे लेता देश प्यार है।
फिर भी–
फिर भी क्या?
मेरे साथ मेरी परछाई है,
सोच में डूबी तन्हाई है,
यादों की अंगड़ाई है,
जलने वालों की रूसवाई है।
किसी का साथ?
है ना–
ये कुदरत के नज़ारे हैं,
पेड़ पौधों के इशारे हैं,
आसमां पे सितारे हैं
दो नैना कजरारे हैं।
किसी से बात?
होती है–
चिड़िया चहचहाती है,
कलियां मुस्कुराती हैं,
हवा सरसराती है,
बारिश भिगो कर जाती है।
कोई गीत?
सुनाई देता है–
बादल गरजते हैं,
पत्ते खड़खड़ाते हैं,

भंवरे गुनगुनाते हैं,
झींगुर गीत गाते हैं।
कोई काम?
काम ही काम-
बस कलम ही सिंजोती हूं,
शब्दों के मोती पिरोती हूं,
जागते जागते सोती हूं,
अपने मन की करती हूं।

◈◈◈◈

बंटवारा

आया आज़ादी महोत्सव, खुशियां ढेरों आई,
कसक बंटवारे की कभी भी भूल न पाई।

गर देश का मेरे बंटवारा न होता,
तो आज कुछ और नज़ारा होता।

कोई तरसता ना अजमेर शरीफ़ को,
ख़ूबसूरत लाहौर भी आज हमारा होता।

वो भी बैठते आकर किनारे ब्यास के,
मदमस्त रावी की चाल हम देख लेते।

हम होते पक्षी, सीमाएं लांघ जाते,
जाकर हम भी पेशावर की मौज लेते।

सारे आशिक नज़ारे लेते ताजमहल के,
पहन जूती कसूरी हम भी ठुमक लेते।

बेख़ौफ़ कच्चे घड़े पर जहां तैर गई सोहनी,
उस चिनाब को हम भी सलाम ठोक देते।

कोई चादर चढ़ाता फूलों की पीरो फकीरों को,
कोई माथा ननकाना साहब जा टेक लेते ।

दर्शन कर लेते पंचमुखी हनुमान मंदिर के,
कटासराज शिवलिंग पर जल चढ़ा देते।

सारा किया धरा है अग्रेज़ों और सियासतियों का,
वरना, दिल्ली, कराची, मुल्तान आज एक होते।

◈◈◈◈

विस्फोटक जनसंख्या

'बच्चे दो ही अच्छे' का गर नियम नहीं अपनाएंगे,
भूख, गरीबी पनपेगी, समृद्धि कहां से लाएंगे।

नदियां सारी हो गई मैली, वन जंगल दिए काट,
खेती को न जगह मिलेगी, कहां उगेगा भात।

बढ़ती जनसंख्या?, भगवान का उपहार नहीं,
संवेदनशील मुद्दा है, कोई खुशियों का त्यौहार नहीं।

बेरोज़गारी, अशिक्षा, बीमारी बढ़ जाएगी,
आबादी पर न लगी रोक तो सब खुशियां छिन जाएंगी।

दाल रोटी के चक्कर में उम्र सारी निकल जाएगी,
पशुओं से भी बदतर जिंदगी, सबके हिस्से आएगी।

सरकार को भी चाहिए, सख़्त बने कानून,
मुफ़्त कुछ भी न मिले, हजरात हो या ख्वातीन।

बेटे बेटी का अंतर भूलो, दोनों एक समान,
शिक्षा के प्रसार से हर मुश्किल हो आसान।

प्रकृति के नियम अटल हैं, धरती, वायु हो या आकाश,
गर मानव न संभला तो हो जाएगा सर्वनाश।

सहने की भी सीमा होती, कुदरत रंग दिखाएगी,
बाढ़, सुनामी, भूचाल से अपना बोझ घटाएगी।

अभी समय है, संभल जा मानव, नहीं तो फिर पछताएगा,
कुदरत का प्रकोप हुआ तो कोई बच न पाएगा।

◈◈◈◈

बांसुरी वाला

कृष्ण सर्वशक्तिमान है,
गीता का ज्ञान महान है।
प्रेम और सत्य की राह पर चलना,
कर्म करना, फल की इच्छा न रखना
भीड़ पड़े पर डरना नहीं,
कर्त्तव्य से पीछे हटना नहीं,
अन्याय का साथ कभी न देना,
रणभूमि में डट कर रहना।
कृष्णा, तुम जानी जान हो,
राधा के तुम तो प्राण हो,
पर फिर भी तुम्हें बताना है,
धरती का हाल सुनाना है।
कंसों ने लगाया डेरा है,
हर और छाया घोर अंधेरा है।
ओढ़ मुखौटा पूतना भी घूमती है,
जहर पिलाने में है वो माहिर
कोई मौका नहीं वो चूकती है।
कैसे द्रौपदी लाज बचाए,
हर और दुर्योधनों ने पंख फैलाए।
गऊ माता भी तुझे पुकारे
देवकी नंदन, आजा यमुना किनारे।
हे बांसुरी वाले, मेरे कान्हा,
अब तुझको पड़ेगा आना।
बस जल्दी से आओ,
और माखन मिश्रा खाओ,
इक बार तो दरस दिखाओ,
मुरली की तान सुनाओ,
मुरली की तान सुनाओ।

◈◈◈◈

गोपियों की पुकार

यशोदा मैया, तेरा कन्हैया,
हर पल हमको है सताए।
        कितना समझाएं इसको,
        पर ज़रा भी लाज न आए।
कभी मटकी फोड़े हमरी,
कभी माखन चुरा के खाए।
        कभी वस्त्र चुरा के हमरे,
        पेड़ पे वो चढ़ जाए।
मुरली की तान सुनाकर,
बावरा हमको बनाए।
        बांसुरी ऐसी बजाए,
        गैया भी भागी आए।
जब तक न देखें इसको,
चैन हमको भी न आए।
        मुरली मनोहर, छलिया ऐसा,
        ऊखली से बंधकर भी न शरमाए।
यशोदा मैया, तेरा कन्हैया,
हर पल हमको है सताए।

◈◈◈◈

पौधों जैसे रिश्ते

बहुत से ऐसे पौधे-पत्तियाँ
कोई देखभाल नहीं करता
उनकी वीरानों में।
वो अपने आप ही बढ़ जाती,
बन बेल पेड़ पे चढ़ जाती।
कैक्टस की तरह,
आवरण कांटों का ओढ़ लेतीं,
बारिश के पानी से जी लेतीं।
दिखावे को रहती हैं अपनों में,
पर मन से हैं अनजानों में।
वो जानती हैं इतना,
जब अपने ही न रहें अपने
क्यूं शिकवा करें बेगानों से।
बेगैरत सी इस दुनिया में,
अब खून के रिश्ते भी पानी हैं।
जीते जी न जब मिला सहारा,
आंसू पीकर किया गुज़ारा।
बाजारू से इन रिश्तों में, चार
कंधों का दिखावा भी बेमानी है,
आज मेरी तो कल तेरी बारी
ये दुनिया आनी जानी है
मेरा मेरा करना नादानी है,
हर चीज़ यहां पर फ़ानी है।

◈◈◈◈

मेरा भारत

वंदे मातरम और तिरंगा
मेरे भारत की पहचान,
धरती, नदिया को मां कहते,
पर्वत माने पिता समान।
मेहमानों का आदर करते,
नहीं करते कोई अहसान।
राम, कृष्ण इस देश में जन्मे,
इसका हमको है अभिमान।
औरों के झंडे में चांद,
हमने छू लिया आसमान।
वैज्ञानिक हमारे अति महान,
पहुंच गए ले चंद्रयान।
जात, रंग का भेद न करते
सभी धर्म हैं एक समान,
इंसानियत है धर्म हमारा,
रिश्तों का करते सम्मान।
ऋषि मुनियों की धरती मेरी,
सबके चेहरे पर मुस्कान।
आत्मनिर्भर देश है मेरा,
नहीं मांगते किसी से दान।

◈◈◈◈

ख़्वाहिश

अच्छा हो गर महसूस करो तपिश मेरे लफ़्ज़ों की,
फ़कत तालियां बजाना ही काफी नहीं।

सब छीन लो, मेरी कलम मत छीनना,
मरना बेहतर है, नहीं जी सकूंगी मैं इसके बगैर।

मैं न रहूं तो मत तलाशना मेरे कमरे को,
कुछ नहीं मिलेगा, चंद आशारों के सिवा।

खुश दिखते हैं, हंसी बांटते हैं,
दिल का जलना भी कोई जलना है।

दिल जलता है, धुआँ उठता है,
वो बेरंग होता है, कहीं दिखता नहीं।

हर चीज़ नाप लेते हैं, हर मर्ज़ भांप लेते हैं,
काश कोई हकीम जांच ले दिल के तूफ़ां को।

वैसे तो हर रिश्ते को तोला जाता है,
काश हमारे आसूंओं का हिसाब भी रखा होता।

कब्र पे आना तो अकेले आना, वरना मत आना,
महबूब के साथ आए तो दिल अब भी जलेगा।

◈◈◈◈

ज़ख़्म

खाए हैं ज़ख़्म कितने किसी को नज़र नही,
मर चुके हैं कब के, यह किसी को खबर नही।

चाहते हैं तुमको भूलना, पर भूल नहीं पाते,
हादसों को भूल जाएं, हम इतने भी निडर नही।

भूल कर भुला न पाते, सो कर भी सो न पाते,
छोड़ दो हमें तन्हा, क्यों इतना जिगर नही।

हो सके तो चले आना इक बार ख़्वाबों में,
रात कितनी बाकी है, हम पे असर नही।

हसरते दीदार है इक बार, चले आना,
जहां फ़ानी है, यहां कोई अमर नही।

दिखावे के लिए वो आए कब्रगाह पर,
फूल चढ़ाए जहां, वो तो मेरी कब्र ही नही।

इंतज़ार करते करते, दिन गिनना ही भूल बैठे,
महफ़िल ही छोड़ आए, अब हममें सबर नही।

तूफ़ान बहुत आए, जाना ही पड़ा उठकर,
डट कर वहीं खड़े रहते, हम शजर तो नहीं।

◈◈◈◈

मेरी कार्यस्थली

वो मेरी कार्यस्थली, वो मेरी पूजा का स्थान,
जहां की मैंने सेवा, बांटा तन मन से ज्ञान।

बदल गया वहां सब कुछ, कोई मुझे न जाने,
ढूंढ रही कोई ऐसा चेहरा जो मुझको पहचाने।

कुर्सी मेज़ वही थी शायद और वही था डैस्क,
जहां बैठ बच्चों के मैंने लिए थे कितने टैस्ट।

आज वहां कोई और था बैठा लिए किताब,
बड़ी लगन से बच्चों को पढ़ा रहा इतिहास।

यहां वहां सब घूम के देखा, याद पुरानी आई,
कभी यहां था राज हमारा, चलती थी पुरवाई।

आज यहां किसी काम से मुझको पड़ा था आना,
कौन हूं मैं, कहां से आई, मुझको पड़ा बताना।

सभी अपना काम कर रहे, और सभी थे मस्त,
किसी के पास समय नहीं, हर कोई व्यस्त।

दुनिया की बस रीत, करें कुर्सी को सलाम,
गया वक्त वापिस न आता 'गुग' जय जय राम।

◈◈◈◈

मैं भी बुद्ध हो जाऊं

जी चाहता है मेरा,
मैं भी बुद्ध हो जाऊं।

छोड़ दूं सब ये झोल झमेले,
दूर जंगलों में निकल जाऊं।

तनिक साफ़ कर लूं रसोई,
दूध भी उफ़न गया है।

कुछ बरतन रखे हैं जूठे,
पतीला भी जल गया है।

मेथी, धनिया गल जाएगा,
जरा सा झाड़ दूं इनको।

मुनिया, चुन्नू आते होंगे,
नाश्ता दे दूं उनको।

मिस्टर को जब भूख लगे तो,
घर को सिर पे उठाते।

रसोई पूरी बिख़रा देते,
सबर न वो कर पाते।

रोटी अम्मा खा न पाती,
खिचड़ी ज़रा बना दूं।

मीठा भाता बाबूजी को
हलवा भी चढ़ा दूं।

राशन की है लिस्ट बनानी,
कई कुछ ख़त्म हुआ है।

बहुत कुछ मंगवाना मुझको,
पूरा महीना पड़ा है।

हो गए सारे काम आज के,
अब मैं जा सकती हूं।

चार जोड़ी कपड़ों से मैं,
उम्र बिता सकती हूं।

जंगल से खा कंद मूल,
बस जोगन मैं बन जाऊंगी।

पर रात को गई अकेली,
तो चरित्रहीन कहलाऊंगी।

मुखौटा ओढ़े फिरते भेड़िए,
खुद को कैसे बचाऊंगी।

दो घरों की इज्ज़त को मैं,
मिट्टी में न मिलाऊंगी।

कैसे सोच लिया मैंने,
मैं बुद्ध हो जाऊंगी।

पिता, भाई, पति और बेटा,
इनका साथ निभाऊंगी।

मन से चाहे बुद्ध हो जाऊं,
तन से हो न पाऊंगी।

चारदीवारी में रह कर ही,
अपना फ़र्ज़ निभाऊंगी।

◈◈◈◈

बारात आई मेरे द्वार

पति- पत्नी का रिश्ता ऐसा,
जो देता अंत तक साथ,
लड़ें झगड़ें, रूठे मनाए,
पर चलें पकड़ कर हाथ।
मां बाप छूटे उम्र के साथ,
बच्चे भी गए मुख मोड़,
भाई बहनों की अपनी दुनिया
साथ गए सब छोड़।
छूट गए सब रिश्ते नाते,
कभी मिले तो तीज त्यौहार।
पहनाई थी जो जयमाला,
अब भी महक रहे वो हार।
बाल रंग लिए, दांत भी नकली,
किचकिच रहती बेमिसाल।
एक ने चाय पी ली फीकी,
दूजे ने ली दो चमच चीनी डाल
कितने भी हम गढ़ लें किस्से,
कर लें मज़ाक सौ बार।
नहीं भूलता वो पल खुशी का
जब बारात आई थी मेरे द्वार।

◈◈◈◈

बापू, फिर से आओ

बापू, तुम सचमुच थे महान,
सादर करते हैं प्रणाम।

अहिंसा का हमें पाठ पढ़ाया,
सच की राह पे चलना सिखाया।

जात पात का भेद मिटाया,
सब जन एक हैं, यही सिखाया।

स्वराज ही था उनका नारा,
भारत मां का पूत निराला।

डांडी मार्च और सत्याग्रह आन्दोलन,
भारत छोड़ो, और नमक कानून तोड़ो।

अंग्रेज़ों ने बहुत जुल्म थे ढाए,
पर बापू के आगे टिक न पाए।

स्वदेशी का पाठ पढ़ाया,
चरखा चलाना भी सिखलाया।

बापू, तुम इक बार फिर आओ,
सपनों का भारत आ सजाओ।

काला बाज़ारी, रिश्वतख़ोरी,
महंगाई ने कमर है तोड़ी।
अब नेता न उस युग जैसे,
लाठी, धोती और लंगोटी जैसे।

कुछ ऐसा करतब दिखलाओ,
गरीबों की भी जेब में आओ।

दर्शन करें तुम्हारे सुबह और शाम,
तुमको हमारा दिल से सलाम।

◈◈◈◈

काश लौट आएं वो दिन!

याद हैं वो दिन, जब पड़ोसी तो क्या,
पूरा मोहल्ला ही अपना हुआ करता था,
पकवान एक घर में बनते,
पर स्वाद हर कोई चखता था।

आपस में आंटी नहीं, मौसी, बुआ,
चाची ताई कह कर बुलाते थे,
बेटी, बेटा किसी का भी हो,
सब अपना हक जताते थे।

मेहमान कभी भी आ जाते,
कोई चिंता नहीं सताती थी,
दाल, चावल, हलवे की कटोरी,
पिछले दरवाज़े से आती थी।

जुड़ी छतें, घर जुड़े,
बरतन भी कहीं के कहीं मिलते थे,
शीला सो गई मुनिया के घर,
पप्पू गप्पू भाईयों से लगते थे।

फुर्सत मिलते ही सब औरतें एक आंगन में मिलती थी,
वड़ियां, पापड़, सेवियां बनती,
साथ में गप्पें चलती थी।

शैतानी कर दी लच्छू ने,
नत्थू के पापा ने खींचे कान,
सारे गांव की लड़कियों का एक सा होता इज्ज़त मान।

शादी होती एक के घर में,
दूर दूर तक होता चाव, कमरे,
बिस्तर हर जगह हाज़िर,
किसी चीज़ का नहीं अभाव।

न जाने दिन कैसे आए,
कोई किसी को जान न पाए,
वाट्सएप पर कार्ड भेज दो,
गुगल-पे से शगुन आ जाए।

शादी पर गर पहुंच गए तो,
खा पीकर बस घर आ जाओ,
बाराती धराती का फ़र्क नहीं अपना अपना काम निपटाओ।

◈◈◈◈

दूरदर्शी

हां मैं दूरदर्शी हूं,
भूतकाल से सीखा,
वर्तमान में जिया,
और भविष्य का सोचा।
अपनी रेखा बड़ी करनी चाही,
मगर दूसरे की मिटा कर नहीं,
अपनी राहों के कांटे निकाले
औरों की राहों में पत्थर बिछाए नहीं।

अरे वो इन्सान ही क्या जो दूसरों से जले,
ईर्ष्या द्वेष बदले की भावना में पले,
खुद को बड़ा दिखा कर दूसरे को छोटा करे,
जलने, घटने, बढ़ने के लिए चांद सूरज हैं ना।

अगले पल का पता नहीं,
और बरसों के सपने सजाते हैं,
कफ़न में जेब नहीं, कब्र में अलमारी नही,
उल्टे सीधे कामों से अंटी भरते जाते हैं।

कभी सोचा नंबर कितने, तो कभी चिंता सैलरी की,
कभी गिनी पेंशन, और अब दवाईयां कितनी,
उम्र है, यूं ही हिसाब किताब में निकल जाएगी,
कर्म अच्छे किए तो पर्दा गिरने पर भी,
तालियां बजती जाएंगी, बजती जाएंगी।

◈◈◈◈

चले गए जो

चले जाते जब दुनिया से तो बस चले जाते,
कुछ खट्टी, कुछ मीठी यादों का भंडार छोड़ जाते।

लड़ते थे, झगड़ते थे, जो छोटी छोटी बातों पर,
दीवार के कोने में बस हार पहन कर सिमट जाते।

वही आंगन, वही दहलीज़, वही गली, वही चौबारा,
बस उस जाने वाले का फिर कभी वापिस न आना।

वो कमरा, अलमारी, कीमती खज़ाना, वहीं रहता,
कपड़ों, जूतों और ग़ैरज़रूरी सामान का बंट जाना।

कैलेंडर, साल, मौसम, तारीख़ें बदलती ही रहती,
मगर वो आवाज़, हंसी, शिकायत सुनाई नहीं देती।

रह जाती याद बस यादें, बातें, चाहने वालों के मन में,
वरना भीड़ को तो कोई फरियाद दिखाई नहीं देती।

अगला जन्म, दूसरी दुनिया या फिर तारा बन जाना,
सब जानते हैं सच, ये जहां है इक मुसाफ़िरखाना।

घरों में रहना मजबूरी है, दिलों में बनाएं आशियाना,
याद इतना रहे, इक दिन बस तस्वीर में सिमट जाना।

◈◈◈◈

औरत से है कायनात

सुन ए पुरुष,
मत समझ औरत को अबला।

उसी से है धरती आकाश,
तुझ अकेले की नहीं बिसात।

गर वो हुई उदास,
कुदरत हो जाएगी निराश।

उसके मुस्कुराने से ही,
खिलती हैं कलियां,
जगमगाते हैं जुगनू,
चमकती गेहूं की बलियां।

वो है दिल से निश्छल,
पर जिद्दी भी, छीन लाई
यमराज से अपना सुहाग।

बात का यकीं करना,
मत लेना अग्नि परीक्षा,
सच्चाई से फट जाएगी धरती,
पुरुषत्व पर प्रश्नचिन्ह,
मिट न पाएगा।

अनेकों रिश्तों के बीच,
कणों सी बंट जाती है,
ज़िंदगी भर समेटते समेटते,
खुद ही सिमट जाती है।

ए स्त्री, खूब हंस, खिलखिला,
अपनी उड़ान से आसमान छू के आ,
पर न फेंकना विद्रूप, मज़ाकिया मुस्कान,
वरना हो जाएगी महाभारत,
कांप जाएंगे धरती आसमान।

समुद्र

दूर नज़र जहां तक जाए,
बस पानी ही पानी।

        पानी ये कोई पी न पाए,
        समुद्र की भी अजब कहानी।

मचले लहरें बल खा कर कुछ ऐसे,
पिया मिलन चले गोरी जैसे।

        उछल उछल ये आती है,
        शांत हो लौट जाती है।

सीप मोती बिखेर कर,
सबका मन हर्षाती है।

        अपना तूफ़ान ये कह न पाए,
        छू कर कदम बस शांत हो जाए।

देखो ये कितना विशाल,
इसका ओर न छोर।

        लाखों जीव जंतु समाए इसमें,
        ताकतवर और कमज़ोर।

दिखने में सुंदर शांत और नीला,
मन को भाए छैल छबीला।

        पूर्णमासी जब जब आए,
        बैचेन फिर लहरें हो जाएं।

मन हमारा भी इसके जैसा, समुद्र मंथन चलने के जैसा।
आसपास दुनिया का रेला, भीड़ में भी दिल रहे अकेला।

कलयुग में कोई शिव न आए, हलाहल जो गले लगाए।
अपना विष हमें खुद पीना है, फिर भी हंस हंस कर जीना है।

◈◈◈◈

ऊपर का माला खाली

नींद में भी जागती,
घड़ी से ज्यादा भागती
अख़बार पढ़ने का समय नहीं
सब खबरें वो जानती।

ख़्वाहिशों को मारती
चाय के कप में छानती
कोई कितने नुक्स निकाले
स्वैटर के फंदों में बुन डालती।

भीगे तौलिए समेटती
गंदी जुराबें सूंघती
अपने सपने मायके में भूल
दूसरे के घर को संवारती।

किताब हो या टाई, रूमाल
हर वस्तु का उसे ख़्याल
रसोई उसकी प्रयोगशाला
बिगड़े बजट को उसी ने संभाला।

मसालों के नाम याद हैं ऐसे
आयुर्वेद का ख़ज़ाना जैसे,
रिश्तों के धागे सुलझाए
सब के मन को वो पढ़ जाए।

पति, बच्चों की उम्र हो लंबी,
दिन भर वो भूखी रह जाए
उसके गुणों से सब अनजान
खो जाती उसकी पहचान।

सुंदर मेहंदी रंगोली बनाए,
वंदनवार से घर को सजाए
पढ़े लिखे, कमा कर लाए
पुरुषों से कमतर कहलाए।

सृष्टि को वही जन्म देने वाली है
फिर भी अक्सर कहा जाता है,
औरतों की बात क्या माननी
उनका ऊपर का माला खाली है।

◈◈◈◈

पूत के पांव दिख जाते पालने में

जब नन्हें बच्चे खेलते यहां वहां
मचाते धमाचौकड़ी, खेलते छुपन छुपाई,
वो बैठ अकेला सोचता, कौन है ये अंग्रेज़,
जिन्होंने है इतनी आफ़त मचाई,
यहां वहां मारपीट करते, न सुनते किसी की दुहाई,
देश हमारा, राज इनका, छोटे बच्चे के बात ये समझ न आई।

बापू ने खेतों में जब बीजे दाने, फसल वहां उग आई,
खुराफ़ाती बच्चे के दिमाग में बात अचानक आई,
लगा बंदूके बीजने, उम्मीद उसे हो आई,
छक्के छुड़ाऊंगा अग्रेज़ों के, जब बंदूके उग आई।

अपनी उम्र से दिमाग कहीं बड़ा, देशभक्ति की लौ जगाई,
रंग लिया बसंती चोला, सब सुख सुविधाएं ठुकराई।

राजगुरू, सुखदेव से दोस्त मिले,
मां भारती की चरण धूलि मस्तिष्क पर लगाई,
गुलामी की ज़ंजीरें तोड़ेंगे, मिलकर कसम ये खाई।

चूम लिया फ़ांसी का फंदा, शिकन न माथे आई,
सलाम अमर शहीदों को आज़ादी हमें दिलाई।

◈◈◈◈

फिर से आओ

भगत सिंह सरीखे वीर,
इक बार धरती पर आते हैं।

राजगूरू, सुखदेव बांकों को,
भी साथ में लेकर आते हैं।

देशभक्ति का जज़्बा,
न मर मिटने का ख़ौफ़।

रंग लिया बसंती चोला,
इन्सान थे या वो तोप।

जहां जन्म लिया था तूने,
मैं आई हूं तेरे गांव।

खटकड़ कला में माथा टेका,
चरण धूल को किया सलाम।

आज़ादी था तुम्हारा नारा,
तूं भारत मां का दुलारा।

अग्रेंज़ों को तूने ललकारा,
कर दिया उन्हें बेचारा।

तेरे नाम से वो डरते थे,
छुप छुप मीटिंग करते थे।

निश्चिंत तारीख़ से पहले
दे दी तीनों को फ़ांसी।

इक बार तो फिर से आओ,
नौजवानों को सबक सिखाओ।

पवित्र पंजाब की धरती को,
कोई राह नई दिखाओ।

नशे में डूब रहे नौजवान,
या करें विदेश को प्रस्थान।

गुरूओं पीरों शहीदों की धरती,
चाहे भगत सिंह फिर से इक बार।

◈◈◈◈

शब्दों का चक्कर

शब्द सिर्फ़ शब्द नहीं, इक पूरा संसार है,
शब्दों की महिमा अपरम्पार है।

इन्हें ढंग से रचना, गढ़ना, पढ़ना, लिखना, बोलना,
आ जाए तो हर तरफ़ प्यार ही प्यार है।

शब्द हंसाते भी हैं, खिलखिलाते भी हैं, रूलाते भी हैं,
मुस्कुराते भी हैं, अकेले में गुदगुदाते भी हैं।

शब्द मरते, थकते, रूकते नहीं, चुभते,
रूठते लड़ते हैं, बनते और बिगड़ते हैं।

बिना सोचे बोलना घातक है, मान,
सम्मान और ध्यान दें, विचारों को उड़ान दें।

शब्दों से ही पहचान है, ईमान और अहसान है,
पूरे होते अरमान हैं।

शब्द तीखे बोल हैं, हीरे से अनमोल हैं,
गर शब्द तीखी धार हैं तो ज्ञान का भंडार हैं।

शब्द ताव, घाव, मुठभेड़ हैं,
हंसती मुस्कुराती सुबह सवेर है।

मधुर और मुखर भी हैं,
नीम से कड़वे और जहर भी हैं।

बिन सोचे नहीं मुंह खोलना,
शब्दों को तोल मोल कर बोलना।

◈◈◈◈

क्या है कविता

मैं न जानूं कविता क्या है
न मैं जानू गज़ल का सार,
छंद बंद का भेद न जानूं,
न मैं कुछ भी करूं विचार।

आसपास मैं जो भी देखूं,
प्रकृति को मैं जब भी निहारूं,
आमों पर फिर कूके कोयल,
सावन में बारिश को पुकारूं।

प्यार मुहब्बत का अरमान,
श्रृंगार रस का करूं बखान।
प्रीतम की विरह मैं जानूं,
भंवरे की भाषा पहचानूं।

सीमा पर जब सेना जाए,
व्याकुल मनवा भी हो जाए।
तूफ़ान, बाढ़, सुनामी आए,
कलम मेरी तब चैन न पाए।

बेटी कोख में मारी जाए,
दहेज की बलि चढ़ाई जाए।
कलम कवि की उगले आग,
प्रशासन से करे फ़रियाद।

कभी रिश्तों के धागे बुनती,
आशाओं के फूल मैं चुनती।
भ्रष्ट नेताओं के खोलूं पोल
झूठे वादों का जो पीटें ढोल।

मन की बात बता सकती हूं,
अपनी कलम चला सकती हूं।
आज़ाद देश की वासी हूं,
दिल की बात बता सकती हूं।

मुझको कवि भले न समझो,
मत समझो साहित्यकार।
मन के तार जब होते झंकृत,
शब्द मेरे लेते आकार।

◈◈◈◈

भोर

भोर की सैर तो बाकमाल,
तन मन को रखे खुशहाल।

जो कोई सुबह सैर को जाए,
दुख तकलीफ़ को दूर भगाए।

ठंडी ठंडी जब चले पुरवाई,
मां की लोरी याद है आई।

ओस से ऐसे दूब नहाई,
गोरी कोई शरमाकर आई।

अधखिली कलियां, झांकें फूल,
मदमस्त हो कर गए सब भूल।

गुनगुन भंवरा डाली डाली,
उड़ती तितली हो मतवाली।

नन्ही चिड़ियां गीत सुनाएं,
कभी यहां तो वहां कभी जाएं।

आमों पर जब कोयल बोले,
गीत सुनाए होले होले।

नीले पीले लाल गुलाबी,
सुंदर से ये फूल उनाबी।

टुकुर टुकुर झांके गिलहरी,
फांदे पेड़ हो दुहरी तिहरी।

सूरज की किरणें जब आईं,
अब तो गरम हुई पुरवाई।

भोर की सैर को जो जन जाए,
दुःख रोग सब भूल वो जाए।

जीवन चुस्त दुरूस्त शानदार,
रहे स्वस्थ ,दीर्घायु का बने हकदार।

तीन रिश्ते

तीन रिश्ते जीवन का सार,
बाकी सब तो है व्यापार।

पहला रिश्ता मां का प्यार,
बेशुमार वो करे दुलार।

बच्चों की वो मांगे ख़ैर,
सुबह, शाम और चारों पहर।

अपने लिए वो कुछ न चाहे,
बच्चों के लिए सदा मांगे दुआएं।

बाप का गर हो सर पर साया,
यूं लगता घने पेड़ की छाया।

आंधी आए या तूफ़ान,
बच्चों को रखे अनजान।

पिता का कंधा जैसे पर्वत,
पूरी हो जाती हर हसरत।

पति पत्नी में गर हो प्यार,
सुखी जीवन का यही है सार।

अंत तक न हाथ छुड़ाए,
अपना अपना धर्म निभाए।

तेरा मेरा कुछ न रह जाए,
सब कुछ बस अपना हो जाए।

बाकी रिश्ते भी हैं अच्छे,
कभी सच्चे कभी झूठे लगते।

तीनों रिश्तें कभी न गंवाना,
वरना पड़ेगा फिर पछताना।

◈◈◈◈

पहाड़

बीच पहाड़ों के मैं बैठी,
क्या सुंदर लगे नज़ारा,
कल कल झरना पास ही बहता,
मन को मोहती जल की धारा।

देवदार के पेड़ वो ऊँचे,
आकाश को लगते छूते,
कह रहे वो मानो हमसे,
पूरे करो जो सपने छूटे।

दूर क्षितिज के पार से निकली,
सोने सी किरणें अलसाई,
जैसे आँखें खोले नन्हा बच्चा,
लेता हुआ लंबी जम्हाई।

कह रही हो किरणें जैसे,
अंगड़ाई सी लेकर ऐसे
थोड़ी देर अभी सोने दो,
प्यारे पापा सूरज हमको।

फलों से लदी सेबों की डाली,
झुकी हुई कैसी मतवाली,
हाथ बढ़ा कर तोड़ लो मुझको,
देवभूमी की हर बात निराली।

प्रकृति से गहरा नाता,
इंसान क्यूं समझ ना पाता।
इनसे करना हमको प्यार,
यही हैं जीने का आधार।

◈◈◈◈